ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 166 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका मार्च 2022

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

अहेतु की कृपा

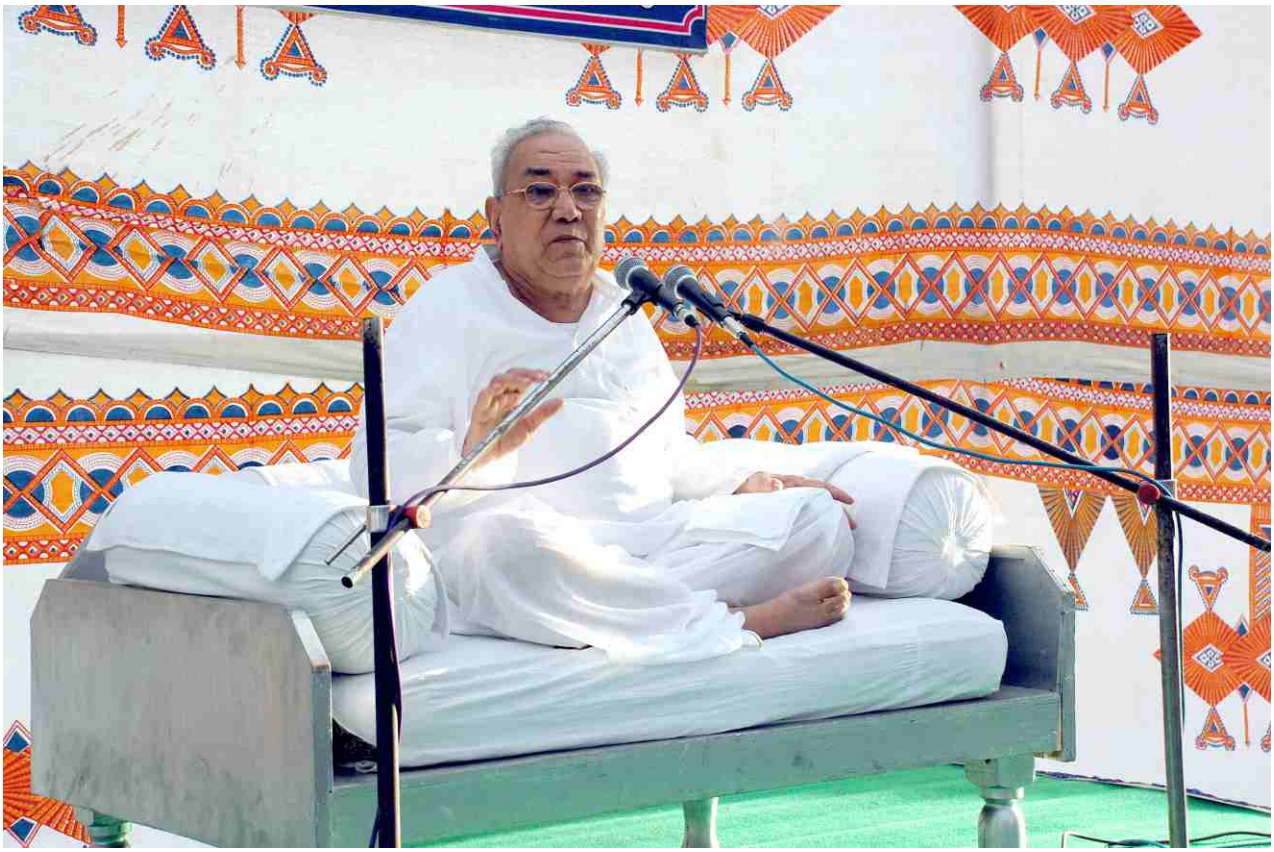

''ऐसी अहेतु की कृपा से मिली दौलत ही मैं संसार में बाँटने निकल पड़ा हूँ। मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। मैं तो मात्र उस परम आत्मा का सेवक हूँ। मैं तो सेवा के बदले मजदूरी मात्र का अधिकारी हूँ। जो कुछ बाँट रहा हूँ, उस धन पर मेरा रत्ति भर भी अधिकार नहीं है।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

27 फरवरी 1988

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 14 अंक: 166 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका मार्च 2022

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

अहेतु की कृपा 2
संसार में भारत की भूमिका के सम्बन्ध में श्री अरविन्द के कथन 4
भारत की स्थिति 7
स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम 8
साधना विषयक बातें 15
रूपान्तरण (Transformation) 20
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....26
कहानी - भक्त प्रहलाद की कथा 28
दिव्य जन्म और दिव्य कर्म 34
सिद्धयोग ध्यान शिविरों की झलकियाँ 40
सिद्ध-योगियों की महिमा 70
योग के आधार 75
साधकों के अनुभव 78
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 82
ध्यान की विधि 85

संसार में भारत की भूमिका के सम्बन्ध में श्री अरविन्द के कथन

''क्रम-विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जायेगा और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान अैर परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना-विचारना शुरू किया था।

यह अभी तक एक व्यक्तिगत आशा और विचार और आदर्शमात्र है जिसने भारत और पश्चिम में, दोनों जगह दूरदर्शी विचारकों को वश में करना शुरू कर दिया है।

इस मार्ग की कठिनाइयाँ प्रयास के किसी भी अन्य क्षेत्र की उपेक्षा बहुत अधिक जबरदस्त हैं, परन्तु कठिनाइयाँ जीती जाने के लिए ही बनी थीं और यदि दिव्य परम इच्छा शक्ति का अस्तित्व है तो वे दूर होंगी ही। यहाँ भी यदि इस विकास को होना है तो चूंकि, यह आत्मा और अन्तर चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगा, इसका प्रारम्भ भारत वर्ष ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा, तथापि केन्द्रीय आंदोलन भारत ही करेगा।''

क्रान्तिदर्शी श्री अरविन्द ने पहले ही उस समय को देख लिया था, जब भारत, धर्म और कर्म के जगत् में संसार का नेतृत्व करेगा। तभी तो उन्होंने स्पष्ट कहा है ''अगर सब कुछ नष्ट भ्रष्ट हो जाय तो भी मैं उस विनाश के परे नये सृजन की राह देखूँगा। आज संसार में जो कुछ हो रहा है, उससे मैं जरा भी नहीं घबराता। मैं जानता था कि घटनाएँ ऐसा रूप लेंगी। रही बात बौद्धिक आदर्शवादियों की तो मैंने उनकी आशाओं को कभी नहीं स्वीकारा, इसलिए मैं निराश भी नहीं होता।''

'प्राचीन काल में जब भगवान् अवतार लेते थे तो साथ ही दैत्य भी

www.the-comforter.org

आया करते थे, जो भगवान् का विरोध करते थे। यह रीति सदा से हम देखते आ रहे हैं कि अपने पूर्ण विनाश तक दैत्यों ने किसी भी युग में भगवान् की सत्ता को स्वीकार नहीं किया है। अतः इस युग का अन्त भी ठीक वैसे ही होगा।

इस सम्बन्ध में फ्रांस के प्रसिद्ध भविष्यद्रष्टा श्री नास्त्रोदमस ने अपनी पुस्तक सेंचुरीज में भी साफ चित्रण किया है। ''सागर के नाम (हिन्द महासागर) वाले उस धर्म (हिन्दू) की विजय शुरू होगी''।

''एक नियम शुन्य खलीफा के निर्णय के विरुद्ध, हिन्दुओं और ईसाइयों के बीच फंस जाएंगे, वे चतुर रक्तलोलुप भ्रमित लोग''। कंत्रा 86 संचुरी 10।

मेरे विचार से यह मुसलमानों के अन्त की तरफ ईशारा है।

सेंचुरी 1 के कंत्रा 50 की भविष्यवाणी ध्यान देने योग्य है

''जिस प्रायद्वीप में तीन समुद्र मिलते हैं, वहाँ बृहस्पतिवार के पुजारी वीर जन्म लेंगे, एशिया में उन्हें रोकने का प्रयास पागलपन होगा।''

जिन लोगों ने हिन्दू संस्कृति को, अपने शासन के दौरान, नष्ट करने का प्रयास किया, उनका अन्त करके हिन्दू संसार में सनातन धर्म की पताका फहरा देंगे। इस सम्बन्ध में सेंचुरी मे लिखा है :-

वह भारतीय नेता यहूदियों की सहायता से रोम और उसके मित्रों की तरफ बढ़ेगा, उनके युद्ध पोत लीबिया से आगे बाइबिल पढ़ने वालों की मौत की दिशा में बढ़ेंगे।

मुसलमान मिश्र को मूर्तिपूजक कहते हैं। सेंचुरी के अनुसार मिश्र और इजराइल, तीसरे विश्व युद्ध में भारत का साथ देंगे। सेंचुरी में लिखा है रूस में साम्यवाद समाप्त हो जायेगा, तथा रूस और अमेरिका दोनों भारत से मित्रता कर लेंगे। भारत तीसरे विश्व

www.the-comforter.org

युद्ध का नेतृत्व करेगा और ये दोनों आज की महाशक्तियाँ उसका साथ देंगी।

इस प्रकार 21 वीं सदी में भारत अपने पुरातन स्वर्णिम युग में पुनः प्रवेश कर, संसार में शान्ति स्थापित करेगा। भारतीय नेता विजय-दुर्ग से आगे बढ़ेंगे, ऐथेंस के पार फ्रांस पहुँच जाएंगे। समुद्र मेघ और बर्फ का राज्य जीत लेंगे तो सभी शत्रु उनके चरणों पर लौटेंगे।

इस सम्बन्ध में संसार के कई संतों ने भविष्यवाणिसयाँ कर रखी हैं। ईसाई धर्म के जन्मदाता यीशु ने भी आपने अन्तिम समय से कुछ दिन पहले भविष्यवाणी की थी, जिसका वर्णन बाइबिल में स्पष्ट तौर पर किया है। -समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
26 जुलाई 1988

भारत की स्थिति

जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान् नहीं होंगे, देश का उत्थान असंभव है।

आज भारत में जितनी तामसिकता है, उतनी किसी युग में नहीं रही। आज देश में जितना अविश्वास है, उतना पहले कभी नहीं रहा। आज देश का हर व्यक्ति एक-दूसरे को ठगने का प्रयास कर रहा है।

कोई समझ नहीं पा रहा है, देश किस दिशा में आगे बढ़ रहा है। ईश्वर पर सही अर्थों में किसी का विश्वास रहा ही नहीं। हर व्यक्ति भविष्य के बारे में सर्वाधिक चिन्तित है। सभी लोग लोभ, लालच के वशीभूत होकर येनकेन प्रकारेण धन संग्रह में लगे हैं। ऐसे लोगों की संख्या देश में बहुत तेजी से बढ़ रही है। देश का आधे से ज्यादा धन, इस वृत्ति के लोगों के पास अनधिकृत रूप से काले धन के रूप में जमा किया हुआ पड़ा है। एक तरफ लोगों को खाने-पीने की मूलभूत जरूरत पूरी करने के लिए धन नहीं मिल रहा है, दूसरी तरफ खर्च करने को कोई जगह नहीं है। जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान् नहीं होंगे, देश का उत्थान असंभव है।

मैं देख रहा हूँ, ऐसी वृत्ति के लोगों का पतन प्रारम्भ हो चुका है, सबसे खुशी की बात तो यह है कि इस बार यह कार्य ऊपर से प्रारम्भ हुआ है, अतः नीचे तक फैलने में अधिक देर नहीं लगेगी। किसी हद तक यह परिवर्तन नीचे तक पहुँच चुका है, यह बहुत ही शुभ लक्षण है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम

श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित पुस्तक –''भारत का पुनर्जन्म'' में विषद वर्णन किया है कि किस प्रकार विदेशी आतताईयों व भारत के भीतर सत्ता लोलुप लोगों ने इस देश का शोषण किया, लूटा और अब कल्कि के आगमन से किस प्रकार देश अपने उदीयमान आलोक से वापस विश्व गुरु बनेगा और पूरे विश्व को शांति का पैगाम देगा। साधकों के ज्ञान बोध के लिए क्रमशः हर अंक में कुछ जानकारियाँ वर्णित की जाएंगी।

पूर्व, पश्चिम की अपेक्षा कई हजार वर्षों से अधिक पुरातन है, किन्तु वर्षों की अधिक लंबाई में अधिक प्रगति की अवस्था अंतर्निहित हो यह आवश्यक नहीं।... एशिया दीर्घायु है। यूरोप संक्षिप्त, अल्पकालिक। एशिया सभी बातों में विशाल आकृति, अपरिमित और अपनी गति–चाल में शानदार तथा उसके जीवन की अवधियाँ उसी के अनुसार नापी जाती हैं।

यूरोप सदी–प्रति–सदी जीता है तो एशिया सहस्राब्दियों में। यूरोप राष्ट्रों में बँटा है, एशिया सभ्यताओं में। पूरे यूरोप में एक ही सभ्यता व्याप्त है, जिसमें संस्कृति एक समान है, प्राप्त की गई और अधिकतर दूसरों से ली हुई। एशिया में तीन सभ्यताएँ पोषित हो रही हैं, उनमें से प्रत्येक मौलिक है और उसी भूमि की है। यूरोप में सब चीजें छोटी हैं, जल्दी वाली हैं. अल्पकालिक हैं; अमरत्व का रहस्य उसके पास नहीं है।

वर्तमान में आध्यात्मिक शक्ति भविष्य में भौतिक शक्ति को सृजित करती और इसी कारण हम सदैव पाते हैं कि यदि वर्तमान में भौतिक शक्ति का प्रभुत्व रहता है तो भविष्य को आध्यात्मिक ही ढालती है और उस पर

www.the-comforter.org

अधिकार करती है।...

चूंकि भारत का आध्यात्मिक जीवन विश्व के भविष्य की प्रथम आवश्यकता है, हम केवल अपनी राजनैतिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के लिए ही नहीं लड़ते बल्कि मानवजाति के आध्यात्मिक उद्धार के लिए।

(वंदे मातरम् के प्रारंभ होने के कुछ दिनों बाद अगस्त 15, 1906 को कलकत्ता में बंगाल नेशनल कॉलेज खुला जिसके प्रिंसिपल श्री अरविन्द बने। एक वास्तविक राष्ट्रीय शिक्षा की खोज में पहले-पहल जो प्रयोग किये गये, यह उनमें से एक था। उसकी स्थापना श्री अरविन्द के गुप्त कार्य में सहयोग देने वालों में से एक सुबोध मल्लिक द्वारा दी गई उदार वित्तीय सहायता से संभव हो सकी। वंदे मातरम् का भार संभालने के बावजूद श्री अरविन्द समय निकालकर भारतीय इतिहास और भूगोल, इंग्लैंड का इतिहास, राजनीति शास्त्र तथा फ्रैंच, जर्मन और अंग्रेजी पढ़ाते थे। एक वर्ष बाद अगस्त 16, 1907 को वंदे मातरम् के प्रचार-प्रसार और प्रभाव से भयभीत होकर ब्रिटिश सरकार ने श्री अरविन्द को राजद्रोह कानून के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया। उसके एक दिन पहले ही वे पैंतीस वर्ष के हुए थे। एक महीने बाद सरकार द्वारा यह साबित करने में असफल होने पर कि वे ही उस भयावह समाचार-पत्र के संपादक थे, वे रिहा कर दिये गये। इसी अवसर पर रवींद्रनाथ टैगोर ने श्री अरविन्द के प्रति अपनी प्रसिद्ध कविता लिखी और "भारतीय आत्मा की स्वतंत्र वाणी का अवतार" के रूप में उनका अभिनंदन किया।

अपनी गिरफ्तारी के कुछ दिनों बाद, जमानत पर रिहा होने पर श्री

www.the-comforter.org

अरविन्द ने बंगाल नेशनल कॉलेज के प्रिंसिपल के पद से इस्तीफा दे दिया। अपनी "हार्दिक सहानुभूति" व्यक्त करने के लिए एकत्र हुए विद्यार्थियों और अध्यापकों के समक्ष जो भाषण उन्होंने दिया उसमें से कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं।)

अगस्त 23, 1907

जब हमने इस कॉलेज की स्थापना की और इस विद्यालय को अपना जीवन अर्पित करने के लिए और काम, अन्य अवसर छोड़े तो ऐसा करके हमने उसकी स्थापना में एक राष्ट्र का बीज, एक नये भारत को देखने की आशा की थी, जो कष्ट और विपत्ति की इस रात के बाद गौरव और महानता के उस दिवस पर अपनी जीवन-यात्रा प्रारंभ करने को है, जब भारत विश्व के हित के लिए काम करेगा। हम यहाँ आपको कुछ थोड़ी-सी जानकारी ही नहीं देना चाहते और न केवल जीविकोपार्जन के लिए आपके आगे जीवन-वृत्तियाँ खोल देना चाहते हैं, बल्कि मातृभूमि के लिए हम ऐसे सुपुत्र तैयार करना चाहते हैं, जो उसके लिए काम करें और कष्ट उठायें। इसके लिए हमने यह कॉलेज प्रारंभ किया और मैं चाहता हूँ कि इस काम में आप अपने आप को भविष्य में लगायें। हमने जिस चीज को अपर्याप्त और अपूर्ण रूप से प्रारंभ किया है उसे पूरा करना और परिपक्व बनाना आपका काम है।

मैं चाहता हूँ कि जब मैं वापस आऊँ तो आपमें से कुछ को संपन्न होते देखूं, आप स्वयं अपने लिए संपन्न नहीं, बल्कि अपनी संपन्नता से आप भारत माता को संपन्न करें। मेरी अभिलाषा आप में से कुछ को महान होते देखने की है, महान आप अपने लिए नहीं, यह नहीं कि आप अपनी अहमन्यता को ही संतुष्ट कर

www.the-comforter.org

लें, बल्कि महान उसके लिए, भारत को महान् बनाने के लिए, उसे इस योग्य बनाने के लिए कि वह पृथ्वी के राष्ट्रों के बीच सिर ऊँचा करके खड़ा हो सके, जैसा कि वह उन बीते दिनों में प्रकाश के लिए विश्व उसकी ओर ताकता था। जो गरीब और अज्ञात रह जाएँ, मैं यह देखना चाहता हूँ कि वे भी अपनी गरीबी और अनजानेपन को अर्पित कर दें। एक राष्ट्र के इतिहास में ऐसे अवसर आते हैं, जब विधाता उसके समक्ष एक ही कार्य, एक ही उद्देश्य रख देता है, जिसके लिए बाकी सब कुछ, चाहे वह अपने आप में कितना ही ऊँचा और गौरवशाली क्यों न हो, त्याग देना पड़ता है। हमारी मातृभूमि के लिए ऐसा अवसर अब आ गया है, जब उसकी सेवा से बढ़कर और कुछ भी प्रिय नहीं है, जब बाकी सारी चीजों को उसी लक्ष्य की ओर उन्मुख कर देना है। वह काम करो कि जिससे उसकी उन्नति हो। कष्ट उठाओ जिससे उसे खुशी मिले। इसी एक सलाह में सब कुछ सम्मिलित है।

सितंबर 22, 1907

जाति मूल रूप में समाज में कार्यों के वितरण की एक व्यवस्था थी। ठीक वैसी ही जैसी यूरोप में वर्ग की, किन्तु भारत में जिस सिद्धांत पर यह वितरण आधारित था, वह इस देश का अनोखा सिद्धांत था।... एक ब्राह्मण केवल जन्म से ही ब्राह्मण नहीं था बल्कि इसलिए कि वह जाति के आध्यात्मिक और बौद्धिक उत्कर्ष को संजोये रखने के अपने दायित्व का

निर्वाह करता था और उसे आध्यात्मिक प्रवृत्ति को सँवारना पड़ता और आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ता था, जिसके बिना वह उस कार्य के योग्य नहीं बन पाता। एक क्षत्रिय इसलिए क्षत्रिय नहीं था कि वह योद्धाओं और राजाओं का पुत्र था, बल्कि इसलिए कि वह देश की रक्षा करने के अपने दायित्व का निर्वाह करता था और उसे राजाओं की प्रवृत्ति को संवारना पड़ता और उसे शक्तिशाली और भारी सामरिक प्रशिक्षण लेना पड़ता, जिसके बिना वह अपने कर्तव्यों के उपयुक्त नहीं बन पाता। यही वैश्यों पर भी लागू होता था, जिनका काम जाति के लिए धन-संचय करना था और शूद्रों के लिए भी, जो सेवा के अपेक्षाकृत साधारण कर्तव्यों को पूरा करते,जिनके बिना अन्य जातियाँ सार्वजनिक हित के लिए अपने हिस्से का काम संपन्न नहीं कर पातीं। मूल रूप से एक ही विराट पुरुष परमात्मा के आगे एक भक्त ब्राह्मण और एक भक्तशूद्र में कोई असमानता नहीं थी, क्योंकि प्रत्येक उसका एक आवश्यक अंग था। मराठी परियाह, चोखा मेला उन ब्राह्मणों का गुरु बन गया, जिन्हें अपनी जाति की पवित्रता का गर्व था; चांडाल ने शंकराचार्य को उपदेश दिया; क्योंकि परियाह के शरीर में ब्रह्म प्रकट हुए और चांडाल में सर्वशक्तिमान साक्षात् शिव उपस्थित थे।

इसलिए जाति न केवल एक संस्था थी, जिसकी सस्ते, दूसरों से लिये गये दोषारोपणों से, जिसकी लंबे अरसे से फैशन चल पड़ी है, प्रतिरक्षा होनी चाहिए, बल्कि वह एक परम आवश्यकता थी जिसके बिना हिंदु सभ्यता अपने विशिष्ट गुणों का विकास नहीं कर पाती, और न अपने अनोखे मिशन को ही पूरा कर पाती।

परंतु इसे स्वीकार करने के मायने

www.the-comforter.org

यह नहीं कि उसकी बाद की विकृतियों को अंकित करने से हम अपने को रोक लें और उसका रूपांतरण न चाहें। मानवीय संस्थानों की प्रकृति ही पतित हो जाने की है, अपनी सजीवता खोकर ह्रास होने की है, और ह्रास का पहला लक्षण लचीलापन खोना और उस सारभूत भावना को भुला देना है जिसको लेकर उन्हें बनाया गया था। आत्मा चिरस्थायी है, शरीर बदलता रहता है; और जो शरीर बदलने से इंकार करता है उसे मरना होगा। आत्मा अपने को अनेक प्रकार से व्यक्त करती है, पर मूल रूप से वैसी की वैसी ही बनी रहती है, किन्तु शरीर को यदि जीवित रहना है तो बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप उसे अपने को बदलना अनिवार्य है। इसमें संदेह नहीं कि जाति की संस्था पतित हो गई है। आध्यात्मिक अर्हताओं के आधार पर, जो कभी अनिवार्य मानी जाती थीं, अब जाति का निर्णय होना समाप्त हो गया है और वे अब गौण और अनावश्यक तक मानी जाने लगी हैं, तथा यह निर्णय व्यवसाय और जन्म के ही निरे भौतिक आधार पर किया जाने लगा है। इस परिवर्तन से जाति की संस्था ने अपने को हिंदुत्व की मूल प्रवृत्ति के ही विपरीत बना लिया है, जिसके अनुसार आध्यात्मिकता पर बल दिया जाता है और भौतिकता को गौण माना जाता है और इस प्रकार अधिकांश में वह अपना अर्थ खो बैठी है। कर्त्तव्य की भावना के स्थान पर जातिगत अहम्मन्यता, अलगाव और श्रेष्ठता की भावना हावी हो गई है और इस परिवर्तन ने राष्ट्र को कमजोर किया है तथा हमें गिराकर अपनी वर्तमान दशा में ला दिया है।

यह महान और पुरातन राष्ट्र कभी मानव प्रकाश का स्रोत था। मानवीय

www.the-comforter.org

सभ्यता का शिखर, साहस और मानवीयता का एक उदाहरण, सुचारु प्रशासन और सस्थिर समाज की पराकाष्ठा, सभी धर्मों की जननी, सारी बुद्धिमत्ता और दर्शन का शिक्षक। घटिया सभ्यताओं और अधिक असभ्य लोगों के हाथों उसने बहुत कष्ट झेला है। उसे रात की छाया में गिर कर प्रायः मौत की कड़ुआहट चखनी पड़ी है। उसके स्वाभिमान को कुचल कर धूल में मिला दिया गया और उसका गौरव तिरोहित हो गया। भुखमरी, संताप और निराशा इस धवल धरती, इन गौरवमय गिरि शृंखलाओं, इन सयानी सरिताओं तथा इन परियों की अधिष्ठात्री बन बैठी हैं जिनकी जीवन-गाथा इतिहासपूर्व की रात्रि के भीतर तक जाती है।

क्रमशः अगले अंक में...

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग पर चलने में सहायता मिल सके।

www.the-comforter.org

जो देखा है वह बिलकुल ठीक है। गले के मध्य में सत्ता का एक केंद्र है। वह है बाह्य अथवा भौतिक मन का केंद्र, अर्थात् जो मन बौद्धिक क्रिया-कलाप को बाह्य रूप देता है, जो मन वाणी का अधिष्ठाता है, जो मन भौतिक का सब कुछ देखता है, उसी को लेकर व्यस्त रहता है। मस्तक का निचला भाग और मुख उसी के अधिकार में हैं। यही मन यदि ऊर्ध्व चेतना किंवा आंतरिक चेतना के साथ संश्लिष्ट हो जाये, इन्हें व्यक्त करे तो अच्छा है। किंतु इसका घनिष्ठ संबंध होता है निम्न भाग के साथ, निम्न प्राण और भौतिक चेतना के साथ (जिसका केंद्र है मूलाधार)। इसीलिये ऐसा होता है। इसीलिये साधना में वाणी का संयम बहुत जरूरी है जिससे वह ऊपर और भीतर की चेतना को व्यक्त करने का अभ्यस्त हो, निम्न अथवा बाह्य चेतना को नहीं।

यही तो चाहिये-बाहरी चीजें अंदर की ओर मुड़ें, उसे चाहें, उसके साथ

एक हों, भीतरी भाव को ग्रहण करें।

शरीर को इस तरह से देखना अच्छा है। फिर भी चेतना देहबद्ध न होने पर भी, चेतना विशाल और असीम हो जाने पर भी, देह को चेतना के एक भाग और शक्ति के यंत्र के रूप में अंगीकार करना चाहिये, शरीर चेतना का रूपांतर करना चाहिये।

यह बहुत अच्छा लक्षण है। ऊर्ध्व चेतना के साथ मिलने के लिये निम्न चेतना ही उठ रही है। ऊर्ध्व चेतना भी जाग्रत चेतना के साथ मिलने के लिये अवतरित हो रही है।

यह है तुम्हारा आज्ञाचक्र अर्थात् भीतरी बुद्धि, चिंतन, दृष्टि और इच्छा शक्ति का केन्द्र–वह इस समय दबाव के कारण इस तरह से खुल गया है ज्योतिर्मय हो गया है कि ऊर्ध्व चेतना के साथ एक हो, उसके प्रभाव को समस्त आधार में फैला रहा है।

यह अनुभूति बहुत सुन्दर और सच्ची है–प्रत्येक आधार इसी तरह मन्दिर बने। जो सुना है कि शक्ति ही सब करेंगी, सिर्फ उनके अंदर डूब जाओ, यह भी बहुत बड़ा सत्य है।

जो विशालता अनुभव कर रही हो, उसमें ऊर्ध्व में वास करना होगा, भीतर गहराई में भी उसी में वास करना होगा–किंतु इसके अतिरिक्त सर्वत्र प्रकृति में, यहाँ तक कि निम्न प्रकृति में भी उसी विशालता को उतारना होगा। तभी निम्न प्रकृति और बहिःप्रकृति के संपूर्ण रूपांतर की स्थायी प्रतिष्ठा संभव है। क्योंकि यह विशालता है शक्ति की चेतना की विशालता–संकीर्ण निम्न प्रकृति जब शक्ति की चेतना में विशाल और मुक्त हो जायेगी तभी उसका आमूल रूपांतर हो सकेगा।

जब हम अपनी अनुभूति को बातों में या लेखों में व्यक्त करते हैं तब वह या तो कम हो जाती है या बन्द हो जाती है, यही तो बहुत–से लोगों के साथ होता है। इसीलिये योगी प्रायः अपनी अनुभूतियों की बात किसी से नहीं कहते या फिर स्थायी हो जाने के

www.the-comforter.org

बाद कहते हैं। तथापि गुरु को कहने से कम नहीं होती वरन बढ़ती है। तुम्हें इसी अभ्यास का पालन करना उचित है। बालक है हृदयस्थ भगवान् और शक्ति तो श्रीमाँ ही होंगी। चक्र घूमने का मतलब है कि बाह्य सत्ता में शक्ति का काम चल रहा है-उसका रूपांतर होगा।

जब अनुभूतियाँ आयें तो उन पर अविश्वास न कर उन्हें ग्रहण करना चाहिये। यह थी सच्ची अनुभूति-उपयुक्त या अनुपयुक्त की बात नहीं हो रही, इन सब बातों का साधना में विशेष कोई महत्त्व नहीं, शक्ति के प्रति खुलने से ही सब संपन्न होता है।

मस्तक में जो अनुभव कर रही हो वह है भौतिक मन और नाभि के नीचे है निम्न प्राण। मस्तक में ऐसा होने का अर्थ है कि मन पूरी तरह खुल चुका है और ऊर्ध्व चेतना को ग्रहण करने लगा है।

हाँ, नींद जब सचेतन हो उठती है तब ऐसा होता है। जैसे जाग्रत् अवस्था में वैसे ही निद्रावस्था में साधना अनवरत चलती रहती है। बाह्य प्रकृति से छुटकारा नहीं मिल रहा है अतः हैं ये कठिनाइयाँ। बाह्य प्रकृति का जब नया जन्म होगा, तब बाधाएँ और नहीं रहेंगी। ये दो बाधाएँ सभी साधकों में होती हैं। पहली है प्राण की, दूसरी शरीर-चेतना की। इनसे अपने को अलग रखने पर ये कम हो जायेंगी और अंत में मिट जायेंगी।

सभी को इन बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यदि ऐसा न होता तो चन्द दिनों में योग-सिद्धियाँ मिल जाया करतीं। कठिनाइयाँ सहज ही दूर नहीं होती। खूब बड़े साधकों को भी 'आज ही' पल-भर में सब बाधाएँ नहीं मिट जाती। मैं तो बहुत बार कह चुका हूँ कि शांत और अचंचल रह शक्ति पर पूरा भरोसा रखते हुए धीर-धीरे आगे बढ़ना होगा। यह पलक झपकते ही नहीं हो जाता। 'आज ही' सब चाहिये ऐसे दावों से कठिनाइयाँ और बढ़ जाती हैं।

www.the-comforter.org

धीर-स्थिर रहना चाहिये।

जब अवचेतना से तमोभाव उठकर शरीर पर आक्रमण करता है तब बीमार-बीमार जैसा लगता है- ऊपर से भागवत शक्ति को शरीर में उतारो- सब ठीक हो जायेगा।

अवचेतना की बाधाओं से छुटकारा पाने का उपाय है पहले उन्हें पहचान लेना, फिर उन्हें झाड़ फेंकना, अंत में शक्ति के भीतर के या ऊर्ध्व के प्रकाश और चेतना को शरीर की चेतना में उतारना। उससे अवचेतना में ignorant movement (अश वृत्तियां) भागेगी और उसके बदले में उस चेतना की वृत्तियां स्थापित होगी। पर यह सहज ही नहीं होता, धीरज के साथ करना होगा। अटूट धीरता चाहिये। शक्ति पर भरोसा ही है संबल। फिर भीतर रह पाने पर, भीतरी दृष्टि और चेतना रख पाने पर न उतना कष्ट होता है न परिश्रम करना पड़ता है। ऐसा हर समय नहीं हो पाता। तब श्रद्धा और धैर्य की नितांत आवश्यकता होती है।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह हमेशा अपने भीतर नहीं रह पाता-किंतु शक्ति को भीतर-बाहर सभी स्थितियों में अनुभव कर सकने से ये कठिनाइयाँ नहीं रह जाती। वैसी अवस्था आयेगी।

अशुद्ध प्रकृति ही साधकों में बाधाओं का सृजन करती है। काम-भोग की इच्छा, अज्ञानता आदि मनुष्य की अशुद्ध प्रकृति के ही अंतर्गत हैं। ऐसी कठिनाइयाँ सब में ही होती हैं। जब आयें तब विचलित न हो, शांत रह अपने को उनसे अलग रखा उनका प्रत्याख्यान करना चाहिये। यदि कहो कि "हम पापी हैं" आदि तो दुर्बलता की ही वृद्धि होती है। कहना चाहिये-'यह है मानव की अशुद्ध प्रकृति, यह मनुष्य के साधारण जीवन में रहती है तो रहे-मैं नहीं चाहती, मैं भगवान् को चाहती हूं, भगवती शक्ति को चाहती हूँ-ये सब हमारी यथार्थ चेतना की बातें नहीं। जब-जब ये आयें तब-तब स्थिर रह

www.the-comforter.org

उनका प्रत्याख्यान करूंगी-न ही विचलित होऊंगी न हामी भरूंगी।

मैंने तुम्हें इसके बारे में बार-बार समझाया है-बाधाएँ पल-भर में नहीं जातीं। बाधाएँ हैं मानवी बहि प्रकृति के स्वभाव का फल-वह स्वभाव एक दिन में या चन्द दिनों में नहीं बदलता। श्रेष्ठ साधकों का भी नहीं। तब हां, शक्ति पर संपूर्ण निर्भर रह, शांत और धीर भाव से उत्कंठित न हो। यदि शक्ति को सदा याद करती रहो तो बाधाएँ आने पर भी वे कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगी। समय पर उनका जोर कम हो जायेगा, वे नष्ट हो जायेंगी, तब और नहीं रह जायेंगी।

प्रश्नः- जब ध्यान करने बैठती हूँ, तब मेरे पांव झन-झन करने लगते हैं और अंदर कुछ उटपट करता है।

उत्तरः- यह है शरीर (शरीरस्थ प्राण) में चंचलता। बहुतों में ऐसा होता है। स्थिर रहने पर यह प्रायः छंट जाती है।

प्रश्नः- मैं अंदर जो देखती हूँ, वही कभी-कभी बाहर खुली आँखों से भी क्यों देखती हूँ? यह क्या महज कल्पना है?

उत्तरः- नहीं, जो अंदर दीखता है वही (चर्म) चक्षुओं से भी देखा जा सकता है। पर भीतरी दृष्टि सहज ही खुलती है, बाहर सूक्ष्म दृश्य देखना जबकि कठिन होता है।

भौतिक चेतना का प्रभाव ज्यादा बढ़ गया था इसीलिये अध्यात्म अनुभूतियाँ परदे की ओट में हो गयी हैं, एक दम चली नहीं गईं। बिलकुल ही नीरव नहीं हुआ जाता, उचित भी नहीं। पर पहले पहल जितना संभव हो नीरव, गंभीर होना साधना के लिये अनुकूल होता है। जब बाह्य प्रकृति आकृष्ट हो जायेगी तब बातें करने, हंसने इत्यादि में भी वास्तविक चेतना बनी रहेगी।

हां, उस तरह रोने-धोने से दुर्बलता आती है। सर्वदा, सब अवस्थाओं में धीर और शांत रह, शक्ति पर भरोसा रख उन्हें पुकारो। ऐसा करने से अच्छी अवस्था जल्दी लौट आती है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

परमेश्वर ने सृष्टि का सृजन किया और उसमें विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों आदि का विकास किया। भूमण्डल पर 'मनुष्य', परमेश्वर की सर्वोच्च कृति है, उसमें ज्ञान और विज्ञान की असीम पराकाष्ठा है। सृष्टि के क्रमिक विकास में एक कोशिकीय जीव से विशालकाय जीवों के साथ साथ मनुष्य का जन्म हुआ। प्रत्येक मनुष्य के चेतना का स्तर अलग अलग होता है। चेतना के स्तर के अनुसार ही मनुष्य की जगत् में पहचान होती है।

अतः मनुष्य सृष्टि की सर्वोच्च कृति है लेकिन अभी इस कृति में बहुत सारी अपूर्णता है जो अगले विकास में इन अपूर्णताओं को पूर्ण किया जा सकता है और वह है-अतिमानव। एक ऐसा दिव्य मानव जो रोग, शोक, पीड़ाओं और दुःख-दर्दों से रहित होगा। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार मानव मात्र का दिव्य रूपान्तरण हो जाएगा। इस कार्य के लिए उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या करके सृजनकर्ता को, भूमण्डल पर अवतरित होने के लिए करूण पुकार की। नये युग अर्थात् सत्युग के आगमन और नये जगत् के निर्माण के लिए 24 नवम्बर 1926 को भूमण्डल पर परमसत्ता का भौतिक देह में अवतरण हुआ।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का मुख्य उद्देश्य है-संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण। इस कार्य के लिए उन्होंने जो संजीवनी मंत्र दिया है, उनका बिना किसी पल को गँवाएं सघन जप और नियमित ध्यान पर जोर देना है। इस रूपान्तरण के कार्य के लिए श्री अरविन्द ने विस्तार से समझाया है कि यह कैसे पूर्ण होगा? साधकों के ज्ञान-बोध के लिए यह शीर्षक दिया जा रहा है-

www.the-comforter.org

दूसरी जगहों पर, दूसरे रूप में पुनरुज्जीवित हो जाती है। बुराई बाहर नहीं, अंदर है, नीचे है, और जब तक इस महारोग का इलाज नहीं हो लेगा, तब तक दुनिया ठीक नहीं हो सकती। श्री अरविन्द ने ठीक कहा है – पुराने देवता नयी देह धारना जानते हैं।

बिल्कुल नीचे तल में सारी अव्यवस्थाओं से परे, भय से परे, उस मूर्त विराट भय से भी परे जिसका कि नीचे आधिपत्य है, हमें एक असीम थकावट मिलती है, एक ऐसी चीज़ जो अस्वीकार करती है, जो जीने के इस सारे दर्द से इंकार करती है, प्रकाश के इस बलापहरण को मना करती है। मनुष्य को लगता है कि यदि वहाँ, उस

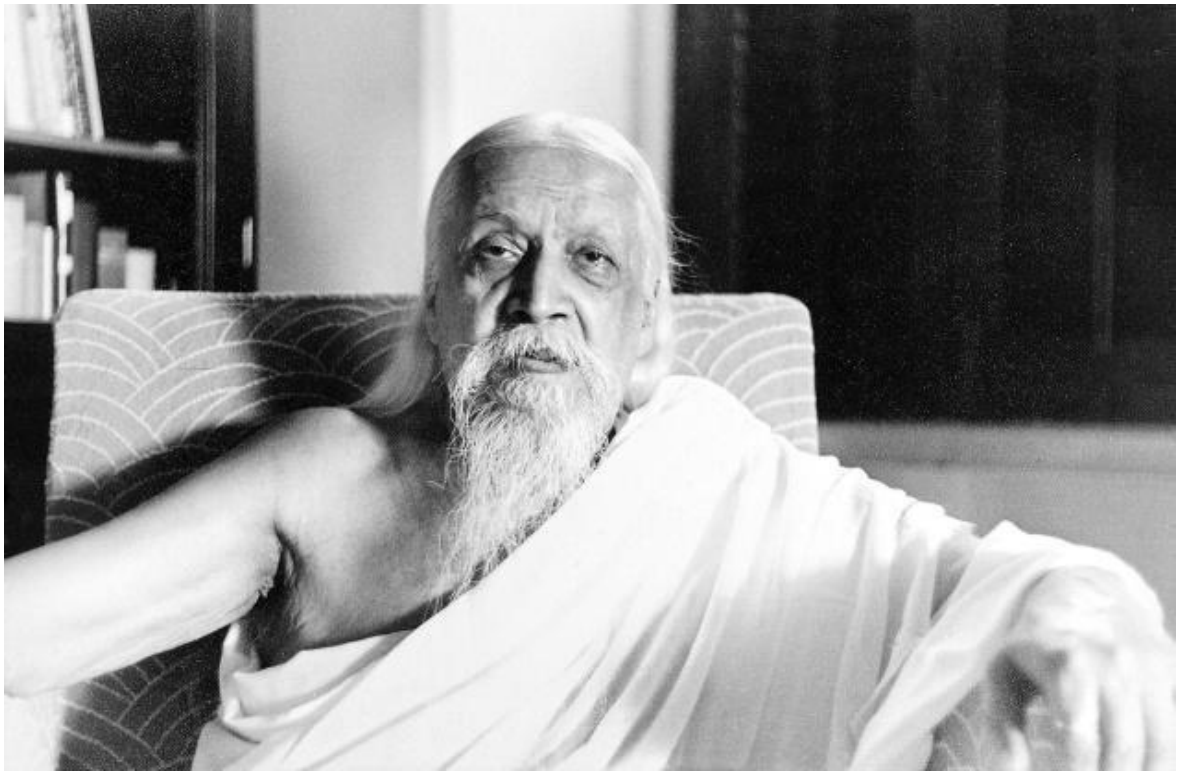

ना की अंतिम गहराई में उतरे तो प्रस्तर की महाविश्रान्ति में लीन हो जाये जैसे कि ऊपर समाधि की अचेतावस्था प्रकाश की महाविश्रांति थी। मरण जीवन का प्रतीप नहीं है, वह भास्वर अतिचेतन का पृष्ठभाग है, उसका प्रवेशद्वार है। इस ना के अन्त में हाँ ही हाँ है जो आनंद को खोजने हेतु हमें एक के बाद एक देह के अन्दर बारबार धकेले जाती है। मरण केवल इस हाँ का खेद है। नीचे तली की असीम थकावट इस परम आनन्द की प्रतिच्छाया है। मरण जीवन का प्रतीप नहीं है ! वह देह की तमावृत विश्रांति है क्योंकि उसे अभी अक्षय आनन्द की ज्योतिपूर्ण विश्रान्ति अधिगत नहीं हुई। जब देह इस परम आनन्द को प्राप्त कर लेगी, ऊपर की ही तरह अपने मास के अन्दर छिपी प्रकाश और आनन्द की इस असीमता को पा लेगी, तब उसे मरने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

इस सब के अंदर 'मैं' और 'मुझे' कहाँ है ? किधर है 'मेरी' कठिनाई, 'मेरी' मृत्यु, 'मेरा' रूपांतर ? साधक ने वैयक्तिक अवचेतन की पतली पपड़ी को फोड़ दिया और अब वह संसार में सर्वत्र फैल गया। सारा संसार विरोध कर रहा है, लड़ाई हम नहीं कर रहे, हरेक चीज़ हमारे विरुद्ध लड़ रही है। हम समझते हैं कि हम सब अलग अलग हैं। हरेक अपने साफ़-सुथरे, छोटे-से चमड़ी के थैले में बंद है और उसका एक 'अन्दर' है एक 'बाहर', और हमारे देशों की उपहासास्पद तुच्छ सीमाओं की तरह ही एक व्यष्टि है एक समष्टि, किन्तु सब एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है। इस दुनिया की कोई विकृति, कोई कलंक ऐसा नहीं जिसकी एकाध जड़ हमारे अन्दर न हो; एक भी मौत ऐसी नहीं होती जिसमें हमारा हाथ न हो। हम सब दोषी हैं और सभी शामिल हैं। यदि सबका उद्धार नहीं हो तो किसी का भी उद्धार नहीं होता। श्री माँ का कहना है कि यह एक देह की नहीं बल्कि देहमात्र की समस्या है। श्री अरविन्द और श्री माँ ने इस तरह अनुभूति के आधार पर, भौतिक रूप से संसार की सारभूत एकता को स्पष्ट कर दिखाया। हम एक बिंदु को स्पर्श करें और अन्य सब अछूते रह जायें यह असंभव है। मनुष्य एक पग आगे या ऊपर की ओर नहीं उठा सकता यदि बाकी सारा संसार भी एक पग ऊपर या आगे की ओर न बढ़ाये। अभी हम ऊपर 'नीति' की कठिनाई की बात कर रहे थे। बिल्कुल संभव है कि दिव्य नीति को यह अभीष्ट न हो कि अन्य सब बिंदुओं के बिना एक बिंदु एकाकी ही प्रगति किये जाये। यही कारण है कि छह हज़ार वर्ष पूर्व वैदिक ऋणिगण को सफलता नहीं मिली। व्यक्ति का पूर्ण और स्थायी रूपांतर

www.the-comforter.org

संभव नहीं, जब तक कि सारे संसार का किसी न्यूनतम मात्रा में रूपांतर न हो। इस प्रकार रूपांतर कार्य का द्वितीय काल समाप्त हुआ।सन् 1926 से सन् 1940 तक चौदह वर्ष अपने चुने मुट्ठी भर शिष्यों के साथ वैयक्तिक और एकाग्र रूप से कार्य करने के पश्चात्, श्री अरविन्द और श्री माँ ने देखा कि सामने एक दीवार खड़ी है।ज्योंही अतिमानसिक प्रकाश जड़तत्त्व में अंतर्वलित समरूप प्रकाश के साथ मिल जाने के लिए पृथ्वी के समीप आने लगता था, त्योंही सामूहिक अवचेतन से गंद की धाराएँ फूट पड़ती थीं और फिर से सब आवृत हो जाता था। श्री अरविन्द का कहना है, मानव-जाति का उद्धार करने के लिए यह पर्याप्त नहीं कि कोई एक मनुष्य, चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो, वैयक्तिक रूप से समस्या को पूरी तरह हल कर डाले, क्योंकि दिव्य प्रकाश नीचे आने के लिए तैयार होता भी है तो यहाँ तब तक नहीं टिक सकता जब तक कि निम्न स्तर उस महान् अवतरण के दबाव को सहन करने के लिए तैयार न हो जाये ।यह बात मतलब रखती है (शायद हम जितना सोचते हैं उससे अधिक) कि रूपांतर-कार्य के द्वितीय काल का अंत तभी हुआ था जब द्वितीय विश्व युद्ध का आरंभ हुआ। जब ऊर्ध्व प्रकाश का भार मनुष्यों के बीच किसी एक देह के अन्दर उतरता है तो संसार की देह भी उत्तप्त होने लगती है। वस्तुतः संसार के भले-बुरे के बारे में हम जानते ही क्या हैं ?

इन सामूहिक अवरोधों के सामने श्री अरविन्द और श्री माँ कुछ देर के लिए असमंजस में पड़ गये । वे विचारने लगे कि क्या यह संभव नहीं कि वे अपने आपको बाकी संसार से पृथक कर अपने कुछ शिष्यों सहित

www.the-comforter.org

सीधे अकेले ही आगे बढ़ते जाएं और रूपांतर सम्पन्न करके फिर सामूहिक कार्य के लिए वापिस लौटें ताकि उनके अपने अन्दर पूर्णतः अथवा अंशतः ही साधित रूपांतर शेष पृथ्वी पर आप ही धीरे धीरे फैलता जाये (यही चीज़ थी जिसने असंख्य आत्मज्ञानियों, गुह्यविदा, मध्यकालीन आदर्श सूरमाओं अथवा अन्य मण्डलों को अपने लिए दुनिया से अलग एक गुप्त स्थान चुनने के लिए प्रेरित किया ताकि वे सामूहिक स्पंदों की गंदगी से बचे रह कर अपना कार्य कर सकें)। किन्तु श्री अरविन्द और श्री माँ ने देखा कि यह भ्रम है और पीछे से नवीन उपलब्धि और पुरानी धरती के बीच का गर्त या श्री अरविन्द ने जैसे कहा है, वायुमण्डलीय खाई इतनी अधिक विराट होगी कि फिर कभी उस पर सेतु न बाँधा जा सकेगा। और व्यक्तिगत सफलता से लाभ ही क्या यदि वह बाकी संसार में संक्रमण न कर सके ? हम ऐण्डरसन के उस राजा की ही तरह होंगे जिसकी हम पहले बात कर रहे थे । यदि एक अतिमानसिक जीव का सहसा धरती पर आविर्भाव हो जाये तो कोई भी उसे देख न पाये ।पहले हमारी आँखें एक दूसरी तरह के जीवन के प्रति खुलनी आवश्यक हैं। श्री माँ का कथन है, यदि तुम एक ऐसे मार्ग पर बढ़ते जाओ जो तैयार हो चुका हो (क्योंकि मार्गों का भी वही हिसाब है जो प्राणियों का – कुछ तैयार होते हैं) और शेष सृष्टि की बाट देखने का धैर्य तुम न रखो, अर्थात् यदि तुम कोई ऐसी अनुभूति प्राप्त कर लो जो संसार की वर्तमान स्थिति की अपेक्षा चरम सत्य के कहीं अधिक समीप हो, तो क्या परिणाम हो ? अखण्डता जाती रहे और केवल समस्वरता ही नहीं, संतुलन भंग हो जाये, क्योंकि सृष्टि का पूरा एक

www.the-comforter.org

खण्ड पीछे रह जाये। और भगवान की भौतिक अभिव्यक्ति अविकल होने के बदले, क्षुद्र, स्थानिक, अत्यल्प रह जाये। और अन्ततरू जो कुछ किया जाना जरूरी है उसका कुछ भी न हो पाये । इसके अतिरिक्त श्री माँ इस बात पर बल देती हैं कि यदि इस कार्य को मनुष्य अकेले करना चाहे तो उसे पूर्ण रूप से करना बिल्कुल असंभव है, क्योंकि हर पार्थिव जीव, चाहे वह कितना भी संपूर्ण क्यों न हो, चाहे वह अत्यधिक उच्च कोटि का हो और बहुत ही विशेष कार्य के लिए उसे विधाता ने रचा हो, फिर भी वह सदा अपूर्ण और सीमित होता है। वह संसार में सत्य का केवल एक पहलू, एक विधान प्रस्तुत करता है । वह विधान अत्यंत दुरूह हो यह संभव है, पर होता वह सदा एक विधान है – और रूपांतर की संपूर्णता एकमात्र उसके अंदर, एक देह के अंदर संपन्न होनी संभव नहीं। मनुष्य अकेले अपनी निजी संपूर्णता पर पहुँच सकता है, मनुष्य अकेले अपनी चेतना में असीम और संपूर्ण बन सकता है- आन्तरिक सिद्धि की कहीं कोई सीमा नहीं है, किन्तु इसके विपरीत बाह्य सिद्धि अनिवार्य रूप से सीमित होती है। इसी कारण से एक व्यापक प्रभाव यदि अभीष्ट हो तो उसके लिए कम से कम एक अल्पिष्ठ संख्या में सदेह व्यक्तियों का होना आवश्यक है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

सच्चा साथी ही मनुष्य का सुख है

और मेरे बांये पैर को ऊपर किनारे की तरफ बढ़ाया। संयोग से मेरे बांए पैर का अंगूठा ऊपर की चट्टान के ऊपर टिक गया और उस पर शरीर का वजन संभालते हुए दाहिने हाथ की शक्ति से शरीर को ऊपर ढकेलते हुए बाहर आ गया। पहले मुझे बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि मुझे बाहर निकलने में सफलता मिल जायेगी क्यों कि ऊपर बड़ा अति बलिष्ठ व्यक्ति मुझे बाहर बिलकुल नहीं बीच रहा था। अतः जब मैं बाहर निकल कर उसके दाहिनी तरफ खड़ा हो गया तो मुझे भारी प्रसन्नता हुई। इसके तत्काल बाद वह दृश्य खत्म हो गया। और सभी बातें बाइबिल से मिल कर वैसे ही सही प्रमाणित हो रही है जैसा उसमें लिखा है। एक दिन ऊपर के दृश्य की बात याद आ गई और सोचा उक्त दृश्य का अर्थ आज तक समझ में नहीं आया। इस पर मुझे प्रेरितों के काम (the acts of the apostles) के 2: 33 को देखने की प्रेरणा मिली। उसे पढ़कर मुझे भारी अचम्भा हुआ। सोचा परमात्मा किस प्रकार जीवन में होने वाली घटनाओं को निश्चित समय पर अपने द्वारा निश्चित किये हुए तरीके से समझा रहा है। मानवीय बुद्धि जिस बात की कभी कल्पना भी नहीं कर सकती, ईश्वर क्षण पर में उसे सम्भव करके कार्य रूप में परिणित कर देता है। मुझे भारी अचम्भा हो रहा है। एक बार मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझ जैसे नाचीज व्यक्ति से ये असम्भव कार्य क्यों करा रहे हो। कृपया किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को यह कार्य सौंपे। जिसकी संसार में प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यता हो। इस पर मुझे उत्तर मिला कि "यह सब तुझे ही करना है, और किसी को नहीं सौंपा जा सकता"। अतः अदृश्य सत्ता के इशारे पर संसार में निकल पड़ा हूँ। मुझे न सफलता से खुशी होती है न असफलता से दुःख। क्यों कि मैं तो उस सत्ता का दास हूँ केवल मजदूरी का अधिकारी हूँ, घाटे, नफे से मुझे कोई वास्ता नहीं। एक लाल
8-9-88

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

अभिमान लक्ष का भूत है

प्रभु की लीला विचित्र है।

ईसाइयों की प्रथम St. John द्वारा लिखी "जीवन का मार्ग" सन् 1984 में अनायास पढ़ने को मिली। परन्तु बाइबिल में वर्णित बातों की प्रत्यक्षानुभूतियां तथा साक्षात्कार बहुत पहले से प्राप्त हो गये थे। The New Testament तो सन् 1986 के अन्तिम दिनों में मिला। इसके बाद सभी तथ्यों का, जो बाइबिल में दो हजार साल पहिले लिख दिया गया था, कार्यरूप में मेरे माध्यम से परिणित होते हुए, परमसत्ता द्वारा दिखाया गया। बड़ी विचित्र बात है। पश्चिमी जगत को स्वीकार करने में भारी मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु सोने को जंक नहीं लगता। आखिर सच्चाई को स्वीकार करना ही पड़ेगा। आइन्सटीन ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि अनादिकाल से बोले गये शब्द ब्रह्माण्ड में आज भी मौजूद हैं। उसे वैज्ञानिक उपकरण से सुने जा सकते हैं। मैं कहता हूँ शब्द ही नहीं सभी घटनाओं के दृश्य भी चाहे वे भूतकाल की हैं या भविष्य में घटने वाली हैं, देखे सुने जा सकते हैं। मैं इसे प्रमाणित करने की स्थिति में हूँ। यीशु-मूसा तो कल हुए थे।

मैं ने एक बार एक दृश्य देखा। मैं किसी सागर को पार करके उसके किनारे पहुँचा। उस सागर में बहुत ऊँची २ लहरें उठ रही थी। परन्तु उससे बाहर निकलने में मैं अपने आप को पूर्ण असमर्थ महसूस कर रहा था, क्यों कि बाहर निकलने के लिए जिन चट्टानों पर चढ़ना था वह इतनी ऊँची थी कि मेरे हाथ की पकड़ से बाहर थी। अचानक क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही बलिष्ठ व्यक्ति ठीक मेरे ऊपर वाली चट्टान पर आकर खड़ा हो गया और झुक कर अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ (नीचे की ओर) बढ़ा दिया। मैं ने उसका दाहिना हाथ मेरे दाहिने हाथ से पकड़ लिया और उसके सहारे झूलने लगा। मैं ने सोचा वह मुझे खींच कर निकाल लेगा, परन्तु उसने एक इंच भी मुझे ऊपर नहीं खींचा, परन्तु मेरा हाथ मजबूती से पकड़े रहा, छोड़ा नहीं। मैं बहुत परेशान हुआ, सोचा क्या किया जाय। फिर मैं ने मेरे दाहिने हाथ की ताकत के सहारे मेरे शरीर को संभाला

www.the-comforter.org

कहानी

भक्त प्रहलाद की कथा

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में भाषण के दौरान यह कथा सुनाई-

हिरण्यकश्यप दैत्यों का राजा था। देव और दैत्य यद्यपि एक ही पिता की संतान थे, पर वे सदैव परस्पर युद्ध में संलग्न रहते थे। दैत्यों को मानव जाति से प्रदत यज्ञ-भाग अथवा जगत् के शासन का कोई अधिकार न था। किन्तु कभी-कभी वे अत्यन्त प्रबल हो जाते और देवताओं को स्वर्ग से बाहर निकाल, उनका सिंहासन छीन, स्वयं राज करने लग जाते थे। तब देवता इस ब्रह्माण्ड के सर्वव्यापी प्रभु विष्णु की प्रार्थना करते,और उनकी सहायता से उनकी विपदाएँ दूर हो जाती थीं। दैत्य स्वर्ग से निकाल दिये जाते और पुनः देव राज करने लगते थे।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप इसी भाँति एक बार अपने जातिबन्धु देवों पर विजय प्राप्त कर, स्वर्ग के सिंहासन पर आरूढ़ हो त्रिभुवन अर्थात् मानव एवं अन्य जीव-जन्तु द्वारा अध्युषित मध्यलोक, सुरधाम स्वर्गलोक और दैत्यभूमि पाताल पर शासन करने लगा। अब, उसने अपने को त्रिभुवन का स्वामी घोषित कर दिया और यह घोषणा करवा दी कि उसके सिवाय दुनिया में कोई ईश्वर नहीं है; इसलिए कहीं भी कोई विष्णु की पूजा न करे और त्रिभुवन में एकमात्र उसी की पूजा की जाए।

हिरण्यकश्यप के प्रहलाद नामक एक पुत्र था। अपनी शैशवावस्था से ही उसकी भगवान् विष्णु में परम अनुरक्ति थी। बाल्यकाल में ही उसकी इस विशुद्ध भक्ति के लक्षण देख, दैत्यराज हिरण्यकश्यप को भय हुआ कि जिस पाप को वह संसार से ही जड़-मूल सहित नष्ट कर देना चाहता है, वही उसके अपने कुटुम्ब में जड़ जमाने का यत्न कर रहा है। अतः उसने अपने पुत्र को शंड और अमर्क नामक दो अत्यंत

www.the-comforter.org

कठोर और अनुशासन प्रिय आचार्यों को सुपुर्द कर दिया, और उन्हें आज्ञा दी कि भविष्य में प्रहलाद के कानों में विष्णु का नाम तक न पड़े।

दोनों आचार्य कुमार को अपने साथ घर ले आये और उसे उसके समवयस्क अन्यान्य छात्रों के साथ रख कर शिक्षा देने लगे। किन्तु शिशु प्रहलाद शिक्षा में मनोयोग न दे, अपना सारा समय अन्य दैत्य बालकों को भगवान् विष्णु की उपासना सिखाने में ही बिताने लगा। जब आचार्यों को यह ज्ञात हुआ तो वे अतिशय भयभीत हुए। उन्हें प्रतापी दैत्यराज के कोप का अत्यन्त भय था, इसलिए बालक प्रहलाद को इन कार्यों से परावृत करने के लिए वे यथाशक्ति चेष्टा करने लगे। किन्तु प्रहलाद के लिए तो विष्णु-नाम ग्रहण श्वास-प्रश्वास की भाँति स्वाभाविक था; स्वयं विष्णु की उपासना करना और अन्य जनों को उसकी प्रणाली सिखाना-यही उसका जीवन था।

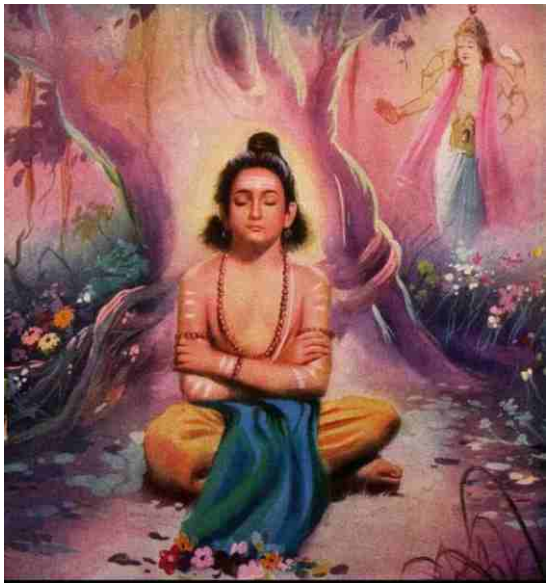

अतः वह अपने मार्ग से विचलित न हो सका। निदान अपने दोष से बचने के लिए आचार्यों ने स्वयं हिरण्यकश्यप से यह भयंकर तथ्य निवेदन कर दिया कि प्रहलाद न केवल स्वयं ही विष्णु की उपासना करता है, वरन अन्य बालकों को भी उपासना सिखा सिखाकर कुपथगामी बना रहा है।

यह समाचार सुन दैत्यराज क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने बालक प्रहलाद को अपने सामने बुलवाया। प्रथम उसने कोमल वाणी में उसे विष्णु की पूजा से परांमुख कर यह समझाने का यत्न किया कि ब्रह्माण्ड में दैत्यराज हिरण्यकश्यप के अतिरिक्त कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, इसलिए केवल उसी की

पूजा की जाए। किन्तु बालक प्रहलाद पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा। वह पुनः पुनः यही कहता था कि सर्वव्यापी, त्रिभुवनेश्वर भगवान् विष्णु ही एकमात्र उपास्य हैं, और तो और दैत्यराज का राजस्व भी भगवान् विष्णु के इच्छाधीन है। अब दैत्यराज के क्रोध की सीमा न रही और उसने तत्काल प्रहलाद के वध की आज्ञा दे दी। दैत्यों ने तीक्ष्ण शस्त्रास्त्रों से उसकी कोमल देह पर आघात किये, पर उसका चित्त विष्णु के ध्यान में इतना मग्न था कि उसे तनिक भी पीड़ा नहीं हुई।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप को जब ज्ञात हुआ कि शस्त्र-प्रहार से प्रहलाद का बाल भी बाँका न हुआ तो वह अत्यन्त भयाकुल हो गया। किन्तु दानवोचित्त असत् प्रवृति के वशीभूत हो, उसने बालक प्रहलाद का वध करने के कई राक्षसी उपायों का अवलम्बन करना शुरू कर दिया। उसने उसे हाथी के पैरों तले कुचल देने का आदेश दिया। किन्तु जिस प्रकार क्रुद्ध हाथी लोह-गोलक को कुचल नहीं सकता, उसी भाँति प्रहलाद का भी वह कुछ न बिगाड़ सका। जब इस उपाय से काम न चला तो दैत्यराज प्रहलाद को पहाड़ की चोटी से फेंकने की आज्ञा दी। इस आदेश का भी पालन हुआ; पर प्रहलाद के हृदय-कमल में भगवान् विष्णु निवास करते थे, इसलिए वह कोमल तृणांकुरों पर धीरे से गिरने वाले हल्के फूल की भाँति पृथ्वी पर आ पड़ा। प्रहलाद के हृदय में भगवान् विष्णु की छवि स्थित थी, उसका कौन क्या बिगाड़ सकता था?

अंत में दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने आज्ञा दी कि पाताल से विशालकाय सर्पों का आह्वान किया जाय, और प्रहलाद को नागपाश में बद्ध कर समुद्र में फेंक दिया जाय, फिर उस पर बड़े-बड़े पहाड़ स्तूपाकार चुन दिये जायँ, जिससे तत्क्षण नहीं तो कालक्रम से उसका अंत हो जाय। इस प्रकार नृशंस व्यवहार किये जाने पर भी, बालक प्रहलाद अपने परमाध्य विष्णु की 'हे

त्रिभूवनेश्वर, हे जगत्पते, हे अनंत-सौन्दर्यनिधे' कहकर प्रार्थना करता रहा। इस प्रकार संकट काल में विष्णु का ध्यान और चिन्तन करते करते बालक को आभास होने लगा कि स्वयं भगवान् विष्णु उसके निकट विद्यमान हैं-निकट ही नहीं वरन् वे उसकी आत्मा में अवस्थित हैं। धीरे-धीरे उसे प्रतीत होने लगा कि वह स्वयं विष्णु है और अग जग में सर्वत्र वही व्याप्त हो रहा है।

ज्यों ही प्रहलाद को यह अनुभूति हुई, नाग-पाश स्वतः ही टूट गये। पहाड़ चूर चूर होने लगे, समुद्र में ज्वार भाटा आने लगा और लहरों ने उसे कोमलता पूर्वक अपने सिर पर धारण कर किनारे तक सुरक्षित पहुँचा दिया। प्रहलाद उस समय यह सब भूल गया कि वह एक दैत्य है और उसके पार्थिव शरीर है। उसे प्रतीति हो रही थी-वह ब्रह्माण्डस्वरूप है और विश्व की समस्त शक्तियों का आदि स्रोत है; इस जगत् में प्रकृति में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो उसे क्षति पहुँचा सके, वह स्वयं प्रकृति का

शास्तास्वरूप है। इस प्रकार समाधि जनित अविच्छिन्न परमानन्द में कुछ काल व्यतीत होने पर शनैः शनैः उसे देह का भान हुआ और स्मरण होने लगा कि वह दैत्य कुलोत्पन्न प्रहलाद है। देह का भान होते ही उसे पुनः वह ज्ञान होने लगा कि उसके अन्दर और बाहर-चारों ओर ईश्वर की सत्ता है और उसे हर वस्तु में विष्णु रूप के दर्शन होने लगे।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने जब देखा

कि उसके अनन्य शत्रु विष्णु के अनन्य भक्त, उसके पुत्र प्रहलाद के निघनार्थ प्रयुक्त सभी भौतिक उपाय विफल हो गये हैं तो वह भीतिग्रस्त और किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। उसने पुनः प्रहलाद को अपने समीप बुलवाया और मधुर वचनों से अपनी सलाह पर चलने का उपदेश देने लगा। किन्तु प्रहलाद पूर्ववत् ही उत्तर देता रहा। दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने सोचा कि शिक्षा और वयोवृद्धि के साथ साथ प्रहलाद के ये बालोचित विचार बदल जाएँगे। इसलिए उसने उसे पुनःशंड और अमर्क के सुपुर्द कर उसे राजधर्म की शिक्षा प्रदान करने का आदेश दिया। किन्तु प्रहलाद की उसमें कोई रूचि न थी, और अवकाश पाते ही वह अपने सहपाठियों को विष्णु की उपासना का उपदेश देने लगता।

दैत्यराज हिरण्यकश्यप के कानों में जब यह समाचार पहुँचा तो वह क्रोध में आपे से बाहर हो गया। उसने प्रहलाद को बुलाकर प्राणान्त की धमकियाँ दीं और उसके उपास्य विष्णु के प्रति हीनतम अपशब्द प्रयुक्त किये। किन्तु इसके उपरान्त भी प्रहलाद बार बार बलपूर्वक यही कहता गया कि भगवान् विष्णु चराचर के स्वामी हैं और अनन्त, अनादि, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान और एकमात्र आराध्य हैं। दैत्यराज हिरण्यकश्यप सक्रोध गरजकर बोला, ''अरे पापिष्ठ, यदि तेरा विष्णु सर्वव्यापी है तो क्या वह उस स्तम्भ में नहीं है ?''प्रहलाद बोला, क्यों नहीं !वे उस स्तम्भ में भी विद्यमान हैं।

''लड़के की धृष्टता से क्रुद्ध हो दैत्यराज बोला, ''रे दुष्ट, मैं अभी इस खड्ग से तुझे यमसदन भेजा देता हूँ, देखूँ, कैसे तेरा विष्णु तेरी रक्षा करता है।'' ऐसा कह दैत्यराज हिरण्यकश्यप अपनी तलवार ले उसकी ओर झपटा और उसने उस स्तम्भ पर एक जोर का वार किया। इसी क्षण उस स्तम्भ से वज्र-निर्घोष हुआ और भगवान् विष्णु नृसिंह रूप धारण कर प्रकट हुए। सहसा यह भीषण रूप देखकर दैत्य भयभीत

हो प्राणरक्षार्थ इतस्ततः दौड़ने लगे। दैत्यराज हिरण्यकश्यप बलपूर्वक प्राणपण से बड़ी देर तक वहाँ युद्ध करता रहा, किन्तु अंत में भगवान् नृसिंह के हाथों पराभूत और निहत हो गया।

तब देवता स्वर्ग से आकर विष्णु का स्तुति-गान करने लगे। प्रहलाद भी भक्ति-विह्वल हो प्रभु के चरणों में प्रणिपात कर, गदगद कण्ठ से विष्णु की प्रार्थना करने लगे। तब भगवान् प्रसन्न हो प्रहलाद से बोले,''वत्स प्रहलाद ! तुम निर्भय हो इच्छानुसार वर माँगो, तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो।'' प्रहलाद ने गद्गद स्वर में उत्तर दिया,''प्रभो, आपके दर्शन पाकर अब और कौन सी इच्छा अतृप्त रह गयी है? आप मुझे किसी प्रकार के ऐहिक या स्वर्गिक ऐश्वर्य का प्रलोभन न दिखाइए।''पुनः भगवान् बोले, ''प्रहलाद, तुम्हारी निष्काम भक्ति देखकर मुझे तुमसे अत्यन्त प्रीति हो गयी है।

हमारा दर्शन निष्फल नहीं होता, इसलिए, वत्स, कोई एक वर अवश्य माँग लो।''तब प्रहलाद ने उत्तर दिया, हे प्रभो,जो तीव्र आसक्ति अज्ञानियोंकी ऐहिक पदार्थों के प्रति होती है, वही मेरे हृदय में आपका स्मरण करते समय आपके प्रति हो।''

तब भगवान् ने कहा, ''प्रहलाद, यद्यपि मेरे परम भक्तों को इहलोक और परलोक में किसी वस्तु की आकांक्षा नहीं रहती है, तथापि मेरे आदेश से सदा मुझमें भक्ति रखते हुए, कल्पान्त तक तुम इस लोक का ऐश्वर्य-भोग और पुण्य कर्मों का अनुष्ठान करो और अन्ततःकालक्रम से देहपात होने पर तुम मुझे प्राप्त करोगे।''इस प्रकार प्रहलाद को वर प्रदान कर भगवान् विष्णु अन्तर्हित हो गये ।ब्रह्मा प्रभृति देवगण ने भी प्रहलाद को दैत्यराज अभिषिक्त कर अपने अपने लोक को प्रस्थान किया।

इस प्रकार अनीति और अधर्म के बढ़ने पर वह पारब्रह्म सगुण साकार रूप में पृथ्वी पर अवतार लेते हैं और विकारों से भूमि का भार हल्का करते हैं ।

गतांक से आगे...

दिव्य जन्म और दिव्य कर्म

-श्री अरविन्द

कर्तृत्व-अभिमान से शून्य, इस मोक्षदायक ज्ञान में स्थित होकर, समस्त कर्मों को करना ही दिव्य कर्मी का प्रथम लक्षण है।

परन्तु श्रीकृष्ण कहते हैं कि इस बारे में ज्ञानी भी भ्रम में पड़ते और मोहित हो जाते हैं। क्योंकि ज्ञान और मोक्ष, कर्म से मिलते हैं, अकर्म से नहीं।

तब हल क्या है? वह किस प्रकार का कर्म है जिससे हम जीवन के अशुभ से छूट सकें, इस संशय, प्रमाद और शोक से, अपने विशुद्ध सद्हेतु-प्रेरित कर्मों के भी अच्छे-बुरे, अशुद्ध और भरमानेवाले परिणाम से, इन सहस्रों प्रकार की बुराइयों और दुःखों से, मुक्त हो सकें?

उत्तर मिलता है कि कोई बाह्य प्रभेद करने की आवश्यकता नहीं : संसार में जो कर्म आवश्यक हैं उनसे बचने की आवश्यकता नहीं; हमारी मानव-कर्मण्यताओं की हदबन्दी की जरूरत नहीं, बल्कि सब कर्म किये जायें, अंतरात्मा को भगवान के साथ योग में स्थित करके, (युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्)। अकर्म मुक्ति का मार्ग नहीं है, जिसकी उच्चतम बुद्धि की अंतर्दृष्टि खुल गयी है, वह देख सकता है कि इस प्रकार का अकर्म स्वयं ही सतत् होनेवाला एक कर्म है, एक ऐसी अवस्था है जो प्रकृति और उसके गुणों की क्रियाओं के अधीन है।

शारीरिक अकर्मण्यता की शरण लेनेवाला मन अभी इसी भ्रम में पड़ा है कि वह स्वयं कर्मों का कर्ता है, प्रकृति नहीं; उसने जड़ता को मोक्ष समझ लिया होता है, वह यह नहीं देख पाता कि जो ईंट-पत्थर से भी अधिक जड़ दिखायी देता है उसमें भी प्रकृति की क्रिया हो रही होती है, उस पर भी प्रकृति अपना अधिकार अक्षुण्ण रखती है। इसके विपरीत, कर्म के पूर्ण प्लावन में भी आत्मा अपने कर्मों से मुक्त है, वह कर्ता नहीं है, जो कुछ

www.the-comforter.org

किया जा रहा है उससे बद्ध नहीं है। जो आत्मा की इस मुक्तावस्था में रहता है और प्रकृति के गुणों में बँधा नहीं है, वही कर्मों से मुक्त रहता है। गीता के इस वाक्य का कि "जो कर्म में अकर्म को और अकर्म में कर्म को देखता है, वही मनुष्यों में विवेकी और बुद्धिमान है," स्पष्ट रूप से यही अभिप्राय है। गीता का यह वाक्य सांख्य ने पुरुष और प्रकृति के बीच जो भेद किया है उस पर प्रतिष्ठित है।

वह भेद यह है कि पुरुष नित्य मुक्त, अकर्ता, चिरशान्त, शुद्ध तथा कर्मों के अन्दर भी अविचल है और प्रकृति चिरक्रियाशीला है, जो जड़ता और अकर्म की अवस्था में भी उतनी ही कर्मरत है जितनी कि दृश्य कर्मस्रोत के कोलाहल में। यही वह उच्चतम ज्ञान है जो बुद्धि के उच्चतम प्रयास से प्राप्त होता है, इसलिए जिसने इस ज्ञान को प्राप्त कर लिया है वही यथार्थ में बुद्धिमान् है, 'स बुद्धिमान् मनुष्येषु', वह भ्रान्त मोहित बुद्धिवाला मनुष्य नहीं, जो जीवन और कर्म को निम्नतर बुद्धि के बाह्य, अनिश्चित और अस्थायी लक्षणों से समझना चाहता है। इसलिए मुक्तपुरुष कर्म से भीत या बंदी नहीं होता, वह संपूर्ण कर्मों को करनेवाला विशाल विराट कर्मी होता है (कृत्स्नकर्मकृत)। वह औरों की तरह प्रकृति के वश में रहकर कर्म नहीं करता, वह आत्मा की नीरव स्थिरता में प्रतिष्ठित होकर, भगवान् के साथ योगयुक्त होकर कर्म करता है।

उसके कर्मों के स्वामी भगवान् होते हैं, वह उन कर्मों का निमित्तमात्र होता है जो उसकी प्रकृति अपने स्वामी को जानते हुए, उन्हीं के वश में रहते हुए करती है। इस ज्ञान की घधकती हुई प्रबलता और पवित्रता में उसके कर्म अग्नि में ईंधन की तरह जलकर भस्म हो जाते हैं और इनका उसके मन पर कोई लेप या दाग नहीं लगता, वह स्थिर, शान्त, अचल, निर्मल, शुभ और पवित्र बना रहता है।। कर्तृत्व-अभिमान से शून्य, इस

www.the-comforter.org

मोक्षदायक ज्ञान में स्थित होकर, समस्त कर्मों को करना ही दिव्य कर्मी का प्रथम लक्षण है।

दूसरा लक्षण है कामना से मुक्ति; क्योंकि जहाँ कर्ता का व्यक्तिगत अहंकार नहीं होता, वहाँ कामना का रहना असंभव हो जाता है, वहाँ कामना निराहार हो जाती है, निराश्रय हो जाने के कारण अवसन्न होकर क्षीण और नष्ट हो जाती है। बाह्यतः, मुक्तपुरुष भी दूसरे लोगों की तरह ही समस्त कर्मों को करता हुआ दिखायी देता है, शायद वह कर्मों को बड़े पैमाने पर और अधिक शक्तिशाली संकल्प और वेगवती शक्ति के साथ करता है, क्योंकि उसकी सक्रिय प्रकृति में भगवान् के संकल्प का बल काम करता है। परन्तु उसके समस्त उपक्रमों और उद्योगों में कामना के हीनतर भाव और निम्नतर इच्छा का अभाव होता है, 'सर्व समारम्भाः कामसंकल्पजिताः'।

उसको अपने कर्मों के फल के लिए आसक्तिनहीं होती, और जहाँ फल के लिए कर्म नहीं किया जाता बल्कि सब कर्मों के स्वामी का नैर्व्यक्तिक यंत्र बनकर ही सारा कर्म किया जाता है, वहाँ कामना-वासना के लिए कोई स्थान ही नहीं होता-वहाँ मालिक के काम को सफलतापूर्वक करने की कोई इच्छा भी नहीं होती, क्योंकि फल तो भगवान् का है और उन्हीं के द्वारा विहित है, किसी व्यक्तिगत इच्छा या प्रयत्न के द्वारा नहीं, वहाँ यह इच्छा भी नहीं होती कि मालिक के काम को गौरव के साथ करूं या इस प्रकार करूं जिससे मालिक संतुष्ट हों, क्योंकि यथार्थ में कर्मी तो स्वयं भगवान् हैं और सारी महिमा है उनकी शक्ति के उस रूप-विशेष की जिसके जिम्मे प्रकृति

www.the-comforter.org

में उस कर्म का भार सौंपा गया है, न कि किसी परिच्छिन्न मानव-व्यक्तित्व की।

मुक्त पुरुष का अंतःकरण और अंतरात्मा कुछ भी नहीं करता, ''नैव किंचित करोति सः''; यद्यपि वह अपनी प्रकृति के अन्दर से कर्म में नियुक्तो होता है, पर कर्म करती है वह प्रकृति, वह कर्त्री शक्ति, वह चिन्मयी भगवती जो अंतर्यामी भगवान् के द्वारा नियंत्रित होती है।

इसका यह मतलब नहीं कि कर्म पूर्ण कौशल के साथ, सफलता के साथ, उपयुक्तसाधनों का ठीक-ठीक उपयोग करके न किया जाय। बल्कि, योगस्थ होकर शान्ति के साथ कर्म करने से कुशल कर्म करना जितना अधिक सुलभ होता है उतना आशा और भय से अंधो होकर या लुढ़कती-पुढ़कती बुद्धि के निर्णयों द्वारा लँगड़े बने हुए कर्मों को, या फिर अधीर मानव-इच्छा की उत्सुकतापूर्ण घबराहट के साथ दौड़-धूप करके कर्म करने से नहीं होता।

गीता ने अन्यत्र कहा है, 'योगः कर्मसु कौशलम्'। योग ही है कर्म का सच्चा कौशल। पर यह सब होता है नैर्व्यक्तिक भाव से एक महती विश्व-ज्योति और शक्ति के द्वारा जो व्यष्टिपुरुष की प्रकृति में से अपना कर्म करती है। कर्मयोगी इस बात को जानता है कि उसे जो शक्तिदी गयी है वह भगवत-निर्दिष्ट फल को प्राप्त करने के उपयुक्त होगी, उसे जो कर्म करना है वह कर्म के पीछे जो भागवत चिंता है उसके अनुकूल होगा और उसका संकल्प, उसकी गति शक्तिऔर दिशा गुप्त रूप से भागवत प्रज्ञा के द्वारा नियंत्रित होती रहेगी-अवश्य ही उसका संकल्प न तो इच्छा होगी न वासना, बल्कि वह सचेतन शक्ति का किसी ऐसे लक्ष्य की ओर नैर्व्यक्तिक प्रवाह होगा जो उसका अपना नहीं है।

कर्म का फल वैसा भी हो सकता है जिसे सामान्य मनुष्य सफलता समझते हैं अथवा ऐसा भी हो सकता

www.the-comforter.org

है जो उन्हें विफलता जान पड़े, पर कर्मयोगी इन दोनों में अभीष्ट की सिद्धि ही देखता है, और वह अभीष्ट उसका अपना नहीं, बल्कि उन सर्वज्ञ का होता है जो कर्म और फल, दोनों के संचालक हैं। कर्मयोगी विजय की खोज नहीं करता, वह तो यही इच्छा करता है कि भगवत्संकल्प और भगवदभिप्राय पूर्ण हो और यह पूर्णता आपातदृश्य पराजय के द्वारा भी उतनी ही साधित होती है जितनी जय के द्वारा और प्रायः जय की अपेक्षा पराजय के द्वारा ही यह कार्य विशेष बल के साथ संपन्न होता है।

अर्जुन को युद्ध के आदेश के साथ-साथ विजय का आश्वासन भी प्राप्त है।पर यदि उसकी हार होनी होती तो भी उसका कर्तव्य युद्ध ही होता; क्योंकि जिन क्रियाशक्तियों के समूह के द्वारा भगवान् का संकल्प सफल होता है उसमें तात्कालिक भाग के तौर पर अर्जुन को उपस्थित काल में यह युद्ध-कर्म ही सौंपा गया है।

मुक्तपुरुष की व्यक्तिगत आशा-आकांक्षा नहीं होती; वह चीजों को अपनी वैयक्तिक संपत्ति जानकर पकड़े नहीं रहता; भगवत्संकल्प जो ला देता है वह उसे ग्रहण करता है, वह किसी वस्तु का लोभ नहीं करता, किसी से डाह (म्दअल, द्वेष या ईर्ष्या) नहीं करता; जो कुछ प्राप्त होता है उसे वह राग-द्वेष रहित होकर ग्रहण करता है। जो कुछ चला जाता है उसे संसार-चक्र में जाने देता है और उसके लिये दुःख या शोक नहीं करता, उसे हानि नहीं मानता।

उसका हृदय और आत्मा पूर्णतया उसके वश में होते हैं, वे समस्त प्रतिक्रिया या आवेश से मुक्त होते हैं, वे बाह्य विषयों के स्पर्श से विक्षुब्ध नहीं होते। उसका कर्म मात्र शारीरिक कर्म होता है (शारीरं केवलं कर्म), क्योंकि बाकी सब कुछ तो ऊपर से आता है, मानव-स्तर पर पैदा नहीं होता, भगवान् पुरुषोत्तम के संकल्प, ज्ञान

और आनन्द का प्रतिबिंबमात्र होता है। इसलिए वह कर्म और उसके उद्देश्यों पर जोर देकर अपने मन और हृदयों में वे प्रतिक्रियाएँ नहीं होने देता जिन्हें हम षड्रिपु और पाप कहते हैं। क्योंकि बाह्य कर्म पाप नहीं है, बल्कि वैयक्तिक संकल्प, मन और हृदय की जो अशुद्ध प्रतिक्रिया कर्म के साथ लगी रहती और कर्म कराती है, उसी का नाम पाप है। नैर्व्यक्तिक आध्यात्मिक मनुष्य तो सदा ही शुद्ध "अपापविद्ध" होता है और उसके द्वारा होनेवाले कार्य में उसकी सहज शुद्धता आ जाती है। यह आध्यात्मिक नैर्व्यक्तिक दिव्य कर्मी का तीसरा लक्षण है। किसी प्रकार की महत्ता या विशालता को प्राप्त सभी मनुष्य यह अनुभव करते हैं कि कोई नैर्व्यक्तिक शक्ति या प्रेम या संकल्प और ज्ञान उनके अन्दर काम कर रहा है, पर वे अपने मानव-व्यक्तित्व की अहंभावापन्न प्रतिक्रियाओं से मुक्त नहीं हो पाते, और कभी कभी तो ये प्रतिक्रियाएँ अत्यंत प्रचंड होती है। परन्तु मुक्तपुरुष इन प्रतिक्रियाओं से सर्वथा मुक्तहोता है। क्योंकि वह अपने व्यक्तित्व को नैव्यक्तिक पुरुष में निक्षेप कर देता है और अब उसका व्यक्तित्व उसका अपना नहीं रह जाता, उन भगवान् पुरुषोत्तम के हाथों में चला जाता है, जो सब सांत गुणों का अनन्त और मुक्तभाव से व्यवहार करते हैं पर किसी के द्वारा बद्ध नहीं होते। मुक्त पुरुष आत्मा हो जाता है और प्रकृति के गुणों का पुंज-सा नहीं बना रहता और प्रकृति के कर्म के लिए उसके व्यक्तित्व का जो कुछ आभास बाकी रह जाता है वह एक ऐसी चीज होती है जो बंधमुक्त, उदार, नमनीय और विश्वव्यापक है। वह भगवान् की अनन्त सत्ता का एक विशुद्ध पात्र बन जाता है, पुरुषोत्तम का एक जीवंत छद्मरूप हो जाता है।

क्रमशः अगले अंक में...

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

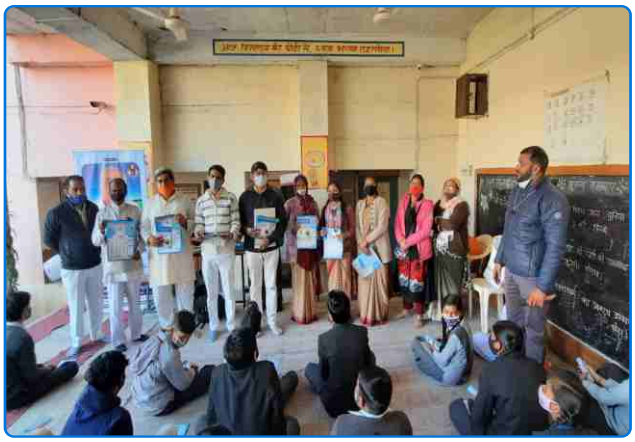

02 फरवरी, 2022 आदर्श विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रावतभाटा, चित्तौड़गढ

02 फरवरी, 2022 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, रावतभाटा, चित्तौड़गढ़

02 फरवरी, 2022 श्रीराम बाल विद्या मंदिर, उच्च माध्यमिक विद्यालय, रावतभाटा, चित्तौड़गढ़

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

03 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय मोहनपुर, करौली

03 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय सायपुर, करौली

03 फरवरी, 2022 अम्बेडकर उच्च माध्यमिक विद्यालय, सलेमपुर, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

03 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कुड़गाँव, करौली

03 फरवरी, 2022 श्री गुरु कृपा उच्च माध्यमिक विद्यालय पैटोली, करौली

03 फरवरी, 2022 महात्मा गांधी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भैंसरोड़गढ़, रावतभाटा, चित्तौड़गढ़

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

03 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भैंसरोड़गढ़, रावतभाटा, चित्तौड़गढ़

03 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, महेसरा, जिला चित्तौड़गढ़

03 फरवरी, 2022 शिखर औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, रावतभाटा, चित्तौड़गढ़

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

04 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भीलापाड़ा, करौली

04 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, केमा, करौली

04 फरवरी, 2022 महादेव उच्च माध्यमिक विद्यालय, नादौती, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

04 फरवरी, 2022 महावीर पब्लिक विद्यालय, नादौती, करौली

04 फरवरी, 2022 राजीव गांधी महाविद्यालय नादौती, करौली

05 फरवरी, 2022 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, बरनाला, सवाई माधोपुर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

05 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बरनाला, सवाई माधोपुर

05 फरवरी, 2022 कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, बरनाला, सवाई माधोपुर

05 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाटोदा, सवाई माधोपुर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

05 फरवरी, 2022 स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल विद्यालय, बाटोदा, सवाई माधोपुर

06 फरवरी, 2022 राजकीय बालिका छात्रावास दिब्स्य, सवाई माधोपुर

06 फरवरी, 2022 जवाहर नवोदय विद्यालय, जाट बड़ौदा, सवाई माधोपुर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

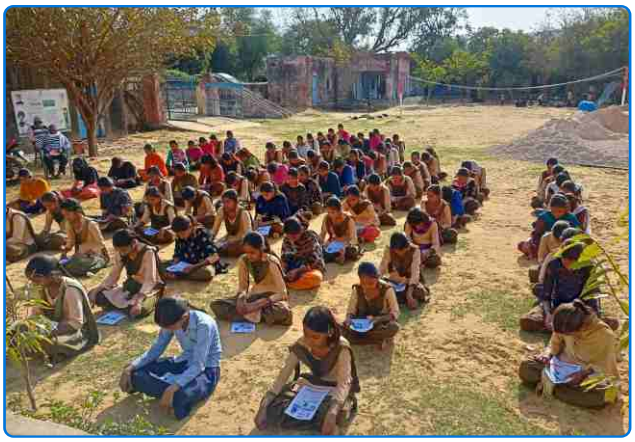

07 फरवरी, 2022 राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गरई, करौली

07 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोटा महोली, करौली

07 फरवरी, 2022 ज्योति पब्लिक विद्यालय, महोली, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

07 फरवरी, 2022 महात्मा ज्यौतिबाँ फुले उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोपालगढ़, करौली

08 फरवरी, 2022 श्री देवनारायण राजकीय बालिका आवासीय विद्यालय, मच्छीपुरा, सवाई माधोपुर

08 फरवरी, 2022 जीनियस उच्च माध्यमिक विद्यालय, तलावड़ा, सवाई माधोपुर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

08 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, तलावड़ा, सवाई माधोपुर

08 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मीनापाड़ा, सवाई माधेपुर

09 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अड़ूदा, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

09 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, एकट, करौली

09 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोड़ली, करौली

09 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जीरोटा, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

09 फरवरी, 2022 बालाजी इन्स्टीट्यूट ऑफ एज्युकेशन, रंगबाड़ी, कोटा

10 फरवरी, 2022 अमर ज्योति सीनियर सैकण्डरी स्कूल चौड़ागाँव, करौली

10 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चौड़ागाँव, सपोटरा, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

10 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जाखोड़ा, करौली

10 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नरौली-डांग, करौली

11 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, नरौली-डांग, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

11 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बूकना, करौली

11 फरवरी, 2022 मीरा शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, राजसमंद

11 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पिपरड़ा, राजसमंद

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

12 फरवरी, 2022 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय रानौली, करौली

12 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, महुआ, करौली

12 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कुंजेला, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

12 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, महुआ, करौली

12 फरवरी, 2022 सुजीत उच्च माध्यमिक विद्यालय, महुआ, करौली

14 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, बरडाला, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

14 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, ल्हावद, करौली

14 फरवरी, 2022 राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, सोप, करौली

14 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बरदाला, करौली

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

14 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सोप, करौली

14 फरवरी, 2022 मानव सेवा शिक्षा निकेतन माध्यमिक विद्यालय, बरदाला, करौली

14 फरवरी, 2022 माँ भारती शिक्षण संस्थान एवं बीएड कॉलेज, स्वामी विवेकानंद नगर, कोटा

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

15 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गण्डाल, सवाई माधोपुर

15 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शफीपुरा, सवाई माधोपुर

15 फरवरी, 2022 माँ भारती शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, तलवंडी कोटा

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

16 फरवरी, 2022 ऑरेंज काउंटी विद्यालय, कांकरोली, राजसमंद

16 फरवरी, 2022 जवाहरलाल नेहरू टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, सकतपुरा, कोटा

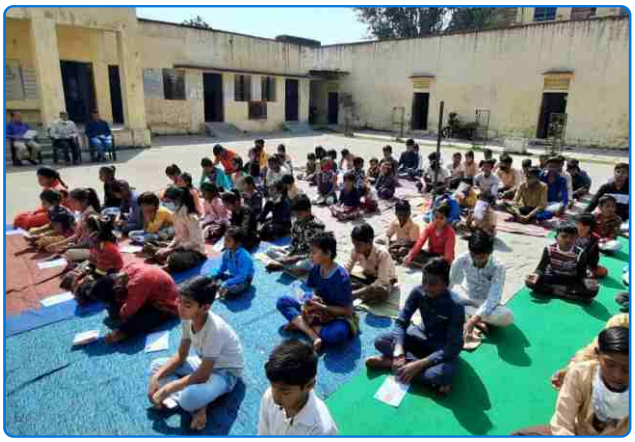

17 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सकतपुरा, कोटा

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

17 फरवरी, 2022 सुभाष पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, कांकरोली, राजसमंद

21 फरवरी, 2022 उमा शिव मेमोरियल कॉलेज, वसंत विहार, कोटा

21 फरवरी, 2022 श्री द्वारकेश बीएड कॉलेज, राजसमंद

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

21 फरवरी, 2022 पीएल दुबे बीएड कॉलेज रानपुर, कोटा

22 फरवरी, 2022 चिल्ड्रन टीटी कॉलेज दादाबाड़ी, कोटा

22 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोटड़ा भगवान, छीपाबड़ौद, बारां

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

23 फरवरी, 2022 कौटिल्य महिला टीटी कॉलेज, नया गांव, कोटा

23 फरवरी, 2022 मॉडर्न स्कूल सारथल, ब्लॉक छीपाबड़ौद जिला बारां

23 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, परेऊ, बाड़मेर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

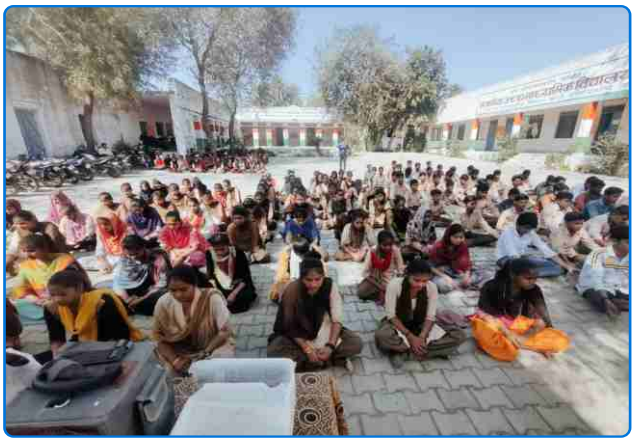

23 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बिलेंडी, ब्लॉक- छीपाबड़ौद, बारां

23 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, परेऊ, बाड़मेर

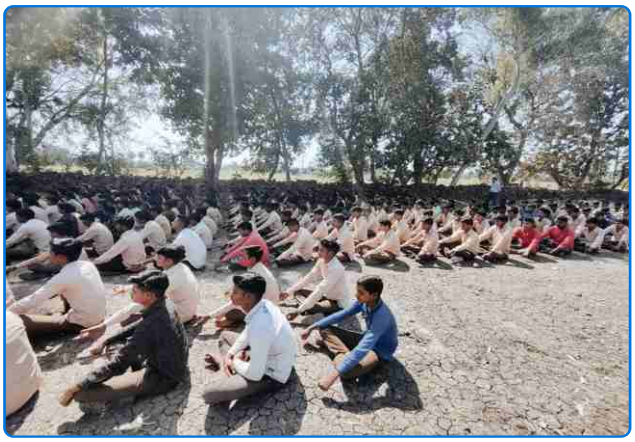

23 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, ब्लॉक- छीपाबड़ौद, बारां

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

23 फरवरी, 2022 सरस्वती उच्च माध्यमिक विद्यालय, परेऊ, बाड़मेर

24 फरवरी, 2022 सरस्वती विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय, खोखसर, बाड़मेर

24 फरवरी, 2022 राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, खोखसर, बाड़मेर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

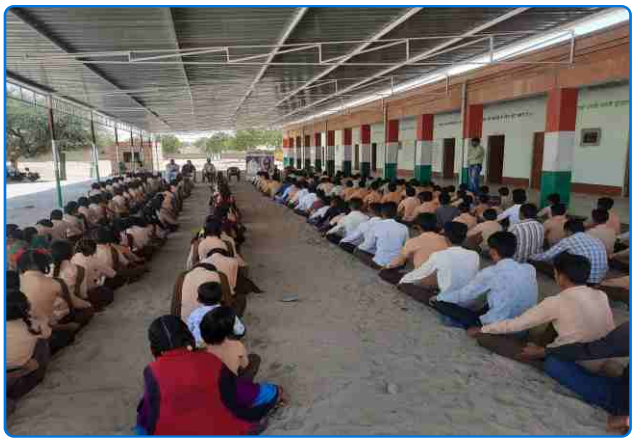

24 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारदा भरतसिंह, बाड़मेर

24 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, खोखसर, बाड़मेर

25 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दूदवा (बालोतरा), बाड़मेर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

25 फरवरी, 2022 माँ रूपादे बाल विद्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, दूदवा (बालोतरा), बाड़मेर

25 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, रूपादेवी, दूदवा (बालोतरा), बाड़मेर

25 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बागुण्डी, बाड़मेर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

26 फरवरी, 2022 राजकीय माध्यमिक विद्यालय, खारड़ा चारणान (गिड़ा), बाड़मेर

26 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खेड़ा, बाड़मेर

26 फरवरी, 2022 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बिटुजा, पचपदरा, बाड़मेर

फरवरी-2022 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

26 फरवरी, 2022 गायत्री आदर्श बाल विकास विद्या मंदिर, बिटुजा, पचपदरा, बाड़मेर

27 फरवरी, 2022 हेवी वाटर कॉलोनी रावतभाटा, जिला चित्तौड़

27 फरवरी, 2022 जिला कारागार, राजसमंद

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

मैंने कहा- ''इसका अर्थ यह हुआ कि किसी साधक का गिरना-उठना आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिस में साधक का कोई दोष नहीं होता। वह अपने संस्कारों एवं प्रारब्ध के हाथों विवश होता है। वह जो कुछ भी करता है सब प्रारब्धाधीन है। यदि किसी साधक से कोई घृणित कार्य हो जाय तो वह घृणा का नहीं, दया का पात्र होता है। उसे किसी तरह संभालने का प्रयास किया जाए, न कि और अधिक गिराने का?' महाराजश्री- इसमें क्या शंका है ! जो लोग ऐसे समय में उससे घृणा करते हैं वह यह बात भूल जाते हैं कि उनका अपना समय आने पर लोग उससे भी अधिक निम्न व्यवहार कर सकते हैं। क्या पता? वह बीते समय में तथा गत जन्मों में क्या-क्या कुकर्म करते रहे हैं? सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि क्या पता वर्तमान में भी उनके कर्म कितने खोटे हैं जिन्हें वह अब तक चालाकी से छिपाये हुए हैं पर ईश्वर अथवा गुरुतत्त्व से कैसे छिपा सकते हैं? वह सब जानता है तथा यथासमय दण्ड भी देता है। सभी जीव हैं। सभी वासनाओं-विकारों के बंधन में हैं। सभी फिसलन भरी भूमि पर चल रहे हैं। कोई भी, कहीं, कभी भी गिर सकता है (कुछ रुककर) किन्तु संसार गिरते को और गिराने में लगा है किन्तु यह नहीं सोचता कि दूसरे को गिराने के प्रयास में वह स्वयं कितना

www.the-comforter.org

गिर रहा है।

इसी प्रकार चर्चा करते हुए, हमारी गाड़ी कोटा जंक्शन पहुँच गई। यहाँ पर वहाँ का शिष्यवर्ग उपस्थित था। गाड़ी वहाँ कुछ अधिक देर ठहरी। कुछ डिब्बे कटे, कुछ जुड़े। महाराजश्री पर लल का नशा चढ़ा था, फिर भी जगत्-व्यवहार का निर्वाह करना ही पड़ता है। लोगों से बातें कीं, उनका कुशल-क्षेम पूछा। वे भोजन तथा चाय लाए थे। चाय ले ली, भोजन साथ रख लिया। गाड़ी आगे चल दी।

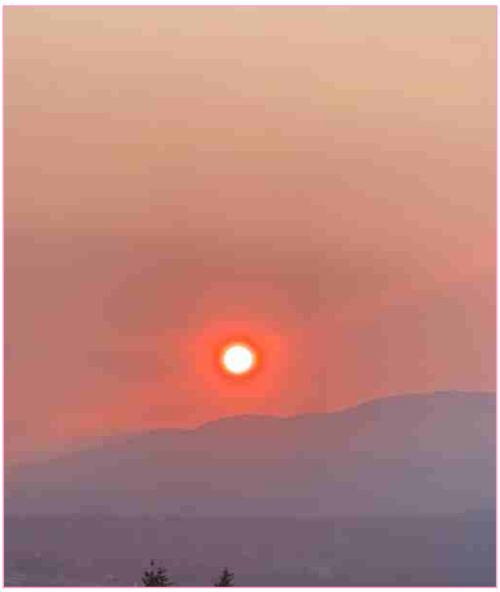

कोटा से गाड़ी छूटी तो बातों का वही क्रम फिर चल निकला। मेरे मन में एक प्रश्न को लेकर काफी ऊहापोह थी। लल का पूर्व जन्म का बेटा, इस जन्म का उसका पति था। किसी को इस बात का पता भले न हो, किन्तु लल इस तथ्य से भली भाँति अवगत थी। जब उसका पुत्र उसके पति के रूप में सामने आता होगा तो लल की मानसिक-स्थिति कैसी होगी? इस स्थिति को सहन कर पाना सरल नहीं। मैंने महाराजश्री से यही विषय छेड़ दिया। संसार में संभवतः ऐसी स्थिति में से कोई भी नहीं निकला।

यह सुनकर महाराजश्री पहले तो थोड़ा मुस्करा दिए, फिर बोले, "पूर्व जन्मों की जानकारी होना या नहीं, यह एक अलग बात है किन्तु इस प्रकार की स्थिति सबके समक्ष होती है। क्या पता? पूर्व जन्मों में किस-किस के साथ हमारा कैसा संबंध था। संभव है इस जन्म का पुत्र, पूर्व के किसी जन्म का पिता, भाई या पति हो। परस्पर संबंध सभी जन्मों में एक समान नहीं रहते। कभी-कभी तो इस संबंध-परिवर्तन पर हंसी आने लगती है। जीवात्माओं का एक दूसरे से नाता बड़ा विचित्र है। कोई नहीं जानता कि किस के साथ

कब, कैसा संबंध था अथवा भविष्य में क्या संबंध उभर आएगा। हम मृत्यु होने पर परस्पर बिछड़ जाते हैं किन्तु लहरों में बहती, हिचकोले खाती लकड़ियों के समान फिर-फिर मिलते-बिछुड़ते रहते हैं। क्या पता कब लकड़ी का कौन सा सिरा, कौन से सिरे से मिल जाय। इस प्रकार मिलने-बिछुड़ने का क्रम चलता रहता है। जिसे इन बातों का ज्ञान हो जाता है उसके लिए यह मिलना- बिछुड़ना माया का एक कौतुक होकर रह जाता है। आपने जो यह कहा कि संसार में ऐसी स्थिति में से कोई नहीं निकला तो इस स्थिति में से निकलते तो सभी हैं किन्तु वस्तु-स्थिति का किसी को ज्ञान नहीं होता। पर यह भी नहीं कह सकते कि किसी को यह ज्ञान होता ही नहीं।''

मैं गहरी सोच में डूब गया। इस शरीर का भी पूर्व जन्मों में क्या पता, किस-किस के साथ, कैसा-कैसा संबंध रहा है। अथवा इस जन्म के संबंध भावी जन्मों में किस रूप में प्रकट हों। संबंधों का गोरख-धंधा भी माया की भूलभुलैया है। गंभीरतापूर्वक विचार-चिन्तन करने से, नाते-संबंधों की श्रृंखला की असारता स्पष्ट हो जाती है। लल के समक्ष यह असारता स्पष्ट थी किन्तु फिर भी व्यावहारिक स्तर पर उसके लिए यह समस्या ही थी। अन्तर में यह विचार चल ही रहे थे कि एकाएक अन्तरप्रवाह दूसरी दिशा में घूम गया, गुरु-शिष्य संबंध भी तो एक संबंध ही है। क्या विभिन्न जन्मों में इस संबंध का स्वरूप भी बदलता रहता है? क्या यह संभव है कि इस जन्म का गुरु किसी जन्म में शिष्य हो जाए तथा शिष्य गुरु बन जाय। मैंने महाराजश्री के समक्ष जिज्ञासा प्रकट कर दी।

महाराजश्री थोड़ी देर के लिए मौन धारण किए रहे, फिर कहने लगे, 'गुरु तथा सद्गुरु में अन्तर है। संसार में सद्गुरु बहुत कम हैं, प्रायः गुरुओं की ही भरमार है जो अपने शिष्यों को या तो कोई मंत्र दे देते हैं अथवा कोई अन्य साधना बता देते हैं। शिक्षक को

www.the-comforter.org

भी गुरु कहा जाता है। माता-पिता भी गुरु हैं। कोई कला विशेष अथवा शास्त्रज्ञान प्रदाता भी गुरु है। जहाँ से कुछ भी सीखने मिले, वह गुरु हो जाता है। यह सभी संबंध संस्कार-संचय का कारण हैं तथा भौतिक हैं। गुरु तथा शिष्य की व्यष्टि मानसिक-शक्ति तथा चैतन्य शक्ति अपने तक ही सीमित रहती है। उनके परस्पर संबंध में शक्ति की कोई क्रिया नहीं, सभी कुछ भौतिक स्तर पर ही घटित होता रहता है। न गुरु को शिष्य के किसी पूर्व जन्म की कोई जानकारी होती है, न उसके संस्कारों का ज्ञान होता है।

यह संबंध इस जन्म का 'अस्थाई संबंध भी हो सकता है जो एक ही जन्म में उभर कर विलीन हो जाता है।' यदि अनेक जन्मों तक चले तो उसका रूप परिवर्तन भी हो सकता है। एक जन्म का गुरु, किसी जन्म में शिष्य भी बन सकता है।

किन्तु सद्गुरु की बात भिन्न है। उनकी अपनी शक्ति जाग्रत होती है तथा वे अध्यात्म की कई सीढ़ियाँ चढ़ चुके होते हैं। उन्हें अपने शिष्य को अपने साथ लेकर चलने की सामर्थ्य प्राप्त होती है। उनमें गुरुतत्त्व कार्यशील होता है जो शिष्य के प्रत्येक् जन्म में, उसकी गतिविधयों पर दृष्टि रखता है। यह गुरु शिष्य संबंध परिवर्तित नहीं होता। हां ! शिष्य के अन्तिम लक्ष्य प्राप्ति कर जाने पर विलीन हो जाता है, जब गुरु-शिष्य दोनों एक समान हो जाते हैं। लल के गुरुदेव स्वामी परमानन्द तीर्थ महाराज, जब भी, जिस जन्म में भी उसे मिले, गुरु रूप में ही मिले। वे चाहे प्रकट रहे हों, अथवा अप्रकट किन्तु लल के सुकर्म-कुकर्म कभी भी उनकी दृष्टि से ओझल नहीं रहे। उन्होंने बार-बार लल को संभाला, उसे गर्त से निकाला, उसका मार्ग-दर्शन किया। यह कभी नहीं हुआ कि लल, परमानन्द तीर्थ महाराज की गुरु बनकर प्रकट हुई हो।

www.the-comforter.org

अधिक क्या कहें? बाकी सारे, भौतिक संबंध हैं, जबकि गुरु-शिष्य संबंध, आत्मिक है।

मैंने कहा कि यह बड़ा विचित्र सा लगता है कि लल ने कभी भी, किसी से अपने गुरुदेव के विषय में चर्चा तक नहीं की। लोग तो अपने गुरुदेव की प्रशंसा के राग अलापते, उनका यशोगान-गुणगान करते नहीं थकते। इस बारे में लल की स्थिति कुछ अशोभनीय सी लगती है।

महाराजश्री- लोग अपने-अपने गुरुदेव का गुणगान-स्तुतिगान चाहे कितना भी करते हों किन्तु उनमें गुरु के प्रति समर्पण का अभाव होता है। कई ऐसे शिष्य भी देखने में आए हैं जो स्तुतिगान करते-करते एक दिन गुरु को छोड़ जाते हैं। ऐसा गुणगान मौखिक होता है, हृदय से नहीं होता। लल ने अपने गुरुदेव का मौखिक गुणगान भले ही न किया हो, किन्तु उन्हें अपने हृदय में धारण कर रखा था। सद्गुरु केवल चिकनी-चुपड़ी बातों से, तथा दम्भपूर्ण व्यवहार से प्रसन्न नहीं होते, भाव देखते हैं। उनकी प्रसन्नता तभी होती है जब गुरु तथा शिष्य, दोनों का हृदय मिलकर एक हो जाता है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

इसका इलाज है-(१) उच्चतर चेतना को प्राप्त करना, उसकी ज्योति और उसकी शक्ति की क्रियाओं को प्रकृति के अंधकारमय भागों में उतार लाना; (२) निद्रा के समय उत्तरोत्तर अधिक सचेतन होना, उस आंतर चेतना को प्राप्त करना जो साधना संबंधी क्रिया के विषय में नींद में भी उतना ही सचेतन रहती है जितना जगे रहने पर रहती है; (३) जाग्रत् अवस्था के संकल्प और अभीप्सा के द्वारा नींद में भी शरीर को प्रभावित करना।

अंतिम चीज को करने का एक उपाय यह है कि सोने से पहले शरीर के अंदर खूब सबल और सचेतन रूप से यह भाव भर दिया जाये कि यह चीज नहीं होनी चाहिये। यह भाव जितना ही ठोस और स्थूल होगा और जितने ही सीधे तौर पर काम-केंद्र के ऊपर निबद्ध किया जायेगा, उतना ही अच्छा होगा। संभव है कि एकदम आरंभ में इसका अन्य कोई फल न हो अथवा सदा एक जैसा न हो; पर प्रायः इस तरह का भाव, अगर तुम्हे मालूम हो कि उसे किस प्रकार बनाया जाता है तो अंत में विजयी होता है; अगर वह स्वप्न को बंद न भी कर सके तो भी वह अक्सर हमारे भीतर एक ऐसी चेतना जाग्रत कर देता है जो यथासमय विपरीत परिणाम को नहीं होने देती।

बार-बार असफल होने पर भी साधना में अपने-आपको उदास होने देना भूल है। साधक को शांत होना चाहिये, अपने प्रयास में डटे रहना चाहिये और प्रतिरोधी से भी कहीं अधिक हठी, दृढ़ होना चाहिये।

कामावेग का यह कष्ट दूर होने के

www.the-comforter.org

लिये बाध्य है अगर तुम इससे छुटकारा पाने के लिये वास्तव में उत्सुक होओ। कठिनाई यह है कि तुम्हारी प्रकृति का वह भाग (विशेषकर, निम्न प्राण और अवचेतना जो नींद में सक्रिय रहते हैं) उन वृत्तियों की स्मृति को बनाये रखता है और उनसे आसक्त रहता है और तुम उन सब भागों को खोलते नहीं और उनकी शुद्धि के लिये भागवत ज्योति और शक्ति को स्वीकार करने के लिये उन्हें बाध्य नहीं करते। अगर तुम ऐसा कर पाते और शोक-संताप करना, परेशान होना और इन चीजों से छुटकारा न पा सकने के विचार के साथ चिपके रहना छोड़कर स्थिर विश्वास और धीर संकल्प के साथ यह आग्रह करते कि वे दूर हो जायें, उनसे अपने-आपको अलग कर लेते, उन्हें स्वीकार करना इंकार कर देते या बिल्कुल ही उन्हें अपना कोई भाग नहीं समझते तो वे कुछ समय के बाद अपनी शक्ति खो बैठते और नष्ट हो जाते।

कामवृत्ति का उपद्रव केवल तभीतक जटिल होता है जब तक उसे मन और प्राण-संकल्प की स्वीकृति प्राप्त होती है। अगर मन से उसे निकाल दिया जाये, अर्थात्, अगर मन स्वीकृति देना इंकार करे, पर प्राण-भाग उससे प्रभावित हो तो यह प्राणमय वासना की एक विशाल लहर के रूप में आती है और मन को जबर्दस्ती अपने साथ बहा ले जाने की कोशिश करती है। अगर इसे उच्चतर प्राण से, हृदय से और कार्यशील जीवनी शक्ति से भी निकाल दिया जाये तो यह निम्न प्राण लेती है और वहां छोटी-छोटी सूचनाओं और वेगों के साथ होती है। फिर निम्न प्राण के स्तर से भगा देने पर वह और अंधाकारमय और जड़वत्

www.the-comforter.org

पुनरावर्तनशील शरीर-भाग में चली जाती है, उसकी क्रिया के फलस्वरूप कामकेंद्र में स्पंदन का अनुभव होता है। वहाँ कामसंबंधी सूचनाओं का प्रत्युत्तर यंत्रवत् चला करता है। फिर भी निकाल देने पर यह और भी नीचे अवचेतना में चली जाती है स्वप्न के रूप में या स्वप्न के बिना भी स्वप्नदोष के रूप में ऊपर आती है। परंतु चाहे जहां कहीं वह क्यों न हट जाये, वह फिर भी कुछ समय तक उसी स्थान को अपना आधार या आश्रय बनाकर दुःख पहंचाने और उच्चतर भागों की स्वीकृति पुनः अधिकृत करने की चेष्टा करती है और उसकी यह चेष्टा तबतक चलती रहती है जबतक उस पर पूर्ण विजय नहीं प्राप्त हो जाती और वह अपने चारों ओर की या आसपास की उस चेतना से भी नहीं निकाल दी जाती जो साधारण या विश्व-प्रकृति के अंदर हमारा अपना ही प्रसारित रूप है।

जब हृत्पुरुष प्राण के ऊपर अपना प्रभाव डालता है तब सबसे पहले तुम्हें जिस चीज से बचने के लिये सावधान रहना चाहिये वह यह है कि इस हृत्पुरुष की क्रिया के साथ प्राण की किसी भ्रांतिपूर्ण क्रिया का जरा-सा मिश्रण न हो जाये। कामवृत्ति एक प्रकार की विकृति या अधःपतन है जो प्रेम को अपना राज्य स्थापित करने में बाधा पहुंचाता है। अतएव जब हृदय में चैत्य प्रेम की क्रिया हो तब जिस एक चीज को कभी भीतर नहीं घुसने देना चाहिये वह है कामप्रवृत्ति या प्राणमय वासना-ठीक उस जैसे कि ऊपर से बल-सामर्थ्य के अवतरित होने पर व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा और गर्व को उससे बहुत दूर रखना होता है।

क्रमश...

www.the-comforter.org

पेट दर्द व गैस की समस्या से निजात

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के पावन चरण कमलों में मेरा कोटि कोटि नमन।

मैं, अशोक मीणा, जिला बारां से हूँ। मुझे वायु विकार (गैस) समस्या थी। हर समय पेट में दर्द रहता था। मेरा काम ज्यादा समय बैठे रहने का था इसलिए समस्या बढ़ती गई। काफी इलाज करवाया,पर इतना कोई आराम नहीं मिला। बारां में पिछले लगभग दो साल से डॉक्टर से इलाज ले रहा हूँ। अभी तक मेरी इस समस्या का समाधान नहीं हुआ। इस बीमारी की वजह से मैं बहुत परेशान हो गया था।

मेरे गाँव के एक गुरु भाई ने बताया कि आप सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के बताए संजीवनी मंत्र के जप के साथ रोजाना ध्यान करो और अपने काम के साथ साथ मंत्र जप करते रहो।

विश्वास तो मुझे उसी समय हो गया था क्योंकि मेरे गाँव में गुरुदेव की इतनी कृपा है कि बड़ी से बड़ी हार्ट ब्लॉकेज ,अस्थमा जैसी और भी कई तरह की बीमारियाँ ठीक हो चुकी हैं, इसलिए मैने भी रोजाना मंत्र जप और ध्यान शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में, मुझे आराम मिलना शुरू हो गया और लगभग एक महीने में तो मुझे पूरा आराम आ गया। जबकि दो साल से डॉक्टर्स के चक्कर काट-काट कर परेशान हो गया था, कोई आराम नहीं मिला था।

सबसे बड़ी बात है, केवल यही एक ऐसा तरीका है जहां हमारा एक पैसा खर्च नहीं हो रहा, हमें कहीं नहीं जाना पड़ रहा,केवल घर बैठे इस काम को करो सारी समस्या का समाधान है, गुरुदेव सियाग सिद्ध योग में।

सभी से निवेदन है, इस सिद्ध योग को अपनाएं, अपना और अपने जानने वालों का भला करें।

-अशोक मीणा
ग्राम पलसावा , जिला बारां,
राजस्थान

www.the-comforter.org

अद्भुत सिद्धयोग से करिश्माई कारगर इलाज

- गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना में संजीवनी मंत्र के सघन मानसिक जाप और नियमित सुबह-शाम 15-15 मिनट ध्यान से हैरान करने वाले वैज्ञानिक परिणाम मिले हैं। 18 नवम्बर 2021 को शुगर लेवल-538 थी। इसके 10 दिन बाद शुगर लेवल जाँच कराया तो 100 आया और उसके बाद 13 दिसम्बर 2021 को टेस्ट कराया तो खाना खाने से पहले 95 और खाना खाने के बाद 109 आया। गुरुदेव की संजीवनी शक्ति से बड़े ही करिश्माई परिणाम मिले, वो भी बिना किसी दवाई के।

मेरा नाम महादेवी वर्मा है। मैं दिल्ली में रहती हूँ। गुरुदेव की मेरे और मेरे परिवार पर असीम कृपा है। मैं सितंबर 2021 से गुरुदेव से जुड़ी हुई हूँ। मुझे गुरुदेव के बारे में मेरी बेटी ने बताया, उसको फेसबुक के द्वारा गुरुदेव की तस्वीर दिखी जिसके नीचे लिखा था कि गुरुदेव के ध्यान और उनके दिए संजीवनी मंत्र के जाप से सभी बीमारियाँ ठीक होती हैं। यह पढ़कर उसने उस विधि को उसी समय से शुरू किया और मुझे भी बताया। गुरु कृपा से मेरे परिवार में लड़ाई झगडे होने बंद हो गए। गुरुदेव से जो माँगती थी, गुरुदेव मेरी इच्छा को पूरी करने लगे।

www.the-comforter.org

एक दिन मेरे पैरों में दर्द होने लगा। मुझे चलने-फिरने में दिक्कत होने लगी। दर्द इतना ज्यादा हुआ की रात को पास के अस्पताल में गई तो डॉक्टर ने ब्लड शुगर टेस्ट किया। उस समय मेरा ब्लड शुगर 538 निकला। डॉक्टर ने दवाई खाने को कहा पर मैंने उनकी बताई दवाई नहीं ली और कहा कि मैं दवाई नहीं खाऊंगी।

सन् 2008-2009 में मेडिकल रिपोर्ट में शुगर लेवल एक बार 463 आया था। जो बाद में काफी दवाईयों खाने के बाद कुछ सामान्य हुआ था।

लेकिन यह समस्या मेरी पिछले 15 साल से थी और उसकी टेबलेट ले रही थी।

18 नवंबर 2021 को मैने ब्लड शुगर टेस्ट कराया था जो 538 था सिर्फ 10 दिन के नाम जप और ध्यान के बाद मैंने घर के पास के डॉक्टर के यहां टेस्ट कराया तो उस समय 100 ब्लड शुगर निकला। फिर मैंने 13 दिसंबर 2021 दोबारा टेस्ट कराया तो खाली पेट 95 निकला और खाने के बाद 109 आया।

गुरुदेव की कृपा से आज मैं पूरी तरफ स्वस्थ हूँ। मुझे कोई बीमारी नहीं है। और आज मैं शुगर वाली टैबलेट्स भी नहीं ले रही, और अच्छे से मीठा भी खा लेती हूँ।

ऐसे परम दयालु समर्थ सद्गुरुदेव के पावन चरण कमलों में कोटि कोटि नमन्।

–महादेवी वर्मा,
विष्णु गार्डन, दिल्ली

www.the-comforter.org

कोरोना ठीक हुआ।

आज आपको अपने गुरू जी परम पुज्य सद्गुरु श्री रामलाल सियाग जी के बारे मे बता रहा हूँ।

मेरा नाम मुकेश कुमार श्रीवास्तव है मैं उत्तरप्रदेश राज्य मैं चंदौली जिले में चक्कीया टाउन का रहने वाला हूँ। मार्च माह में होली का उत्सव बीतने के बाद घर में सब खुश थे लेकिन अचानक अप्रैल माह में 9 तारीख 2021 में मुझे हल्का बुखार आया जांच हुआ तो पता चला कि मुझे कोरोना हो गया है। घर में सब परेशान हो गए क्योंकि बड़ी मुश्किल से डॉक्टर मिलते थे। हर तरफ से परेशानी आने लगी। उसी समय 16 अप्रैल 2021 को मेरी मां का देहांत हो गया। कुछ समझ में नहीं आ रहा था मेरी तबीयत और बिगड़ने लगी क्योंकि एक तरफ कोरोना और दूसरी तरफ घर में गम का माहौल था। मम्मी के जाने के बाद कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था, यहाँ तक की अपने आप को संभालना भी बड़ी मुश्किल हो गया था। एक दिन रात में ऐसे ही फेसबुक से मुझे गुरुदेव सियाग सिद्धयोग के बारे में पता चला। मैंने गुरु जी का ध्यान एवं संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप शुरू कर दिया। मुझे आराम मिलने लगा आज मेरी जिंदगी भी गुरुजी के वजह से ही बची है और 21 मई 2021 को मैं कोरोना मुक्त हो गया और अब हमेशा सुबह-शाम गुरु जी का ध्यान करता हूँ। मेरे लिए कोरोना काल में यह बहुत ही अचूक विधि साबित हुई है। आप सभी लोगों को गुरु जी का ध्यान जप करना चाहिए।

– मुकेश कुमार श्रीवास्तव,
उत्तरप्रदेश

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

www.the-comforter.org

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

तुम्हे गुरु की चेतना के साथ सतत् और सम्पूर्ण सम्पर्क रखना चाहिए। यह मन, प्राण, और शरीर के साथ होना चाहिए।

–श्री अरविन्द साहित्य

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।